ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS

Copyright ANGP

www.angp-hb.co.za

info@angp.co.za

HINDI Heart Book

मनुष्य का हृदय

Copyright ANGP

COPYRIGHT
ISBN 0-908412-03-7

E-MAIL: info@angp.co.za

ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS
P.O. Box 2191, PRETORIA, 0001, R.S.A.
(A Gospel Literature Mission financed by donations)
(Reg. No. 1961/001798/08)

जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है ।

और तुम जानते हो, कि वह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए, और उसके स्वभाव में पाप नहीं ।

जो कोई उसमें बना रहता है, वह पाप नहीं करता, जो कोई पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है, और न उसको जाना है ।

हे बालको, किसी के भरमाने में न आना, जो धर्म के काम करता है, वही उसकी नाई धर्मी है ।

जो पाप करता है, वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है, परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे ।

जो कोई परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता, क्योंकि उसका बीज उसमें बना रहता है और वह पाप कर ही नहीं सकता, क्योंकि परमेश्वर से जन्मा है ।

इसी से परमेश्वर की सन्तान, और शैतान की सन्तान जाने जाते हैं, जो धर्म के काम नहीं करता, वह परमेश्वर से नहीं, और न वह, जो अपने भाई से प्रेम नहीं रखता ।

(१ यूहन्ना ३:४-१०)

Copyright ANCP

म नु ष्य का हृ द य

आत्मिक हृदय का दर्पण (मन दर्पण)

(दस चित्रों में रूपक बयान)

Copyright ANGP

यह पुस्तिका अपने चित्रों सहित प्रथम बार फ्रान्स देश में सन् १७३२ ई० में प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तक "आत्मिक हृदय का दर्पण" या "दिल की पुस्तक" भी कहलाती है। इसकी धर्मशास्त्रिक सत्यता एवं उपयोगिता के कारण यह योरुप तथा अफ्रीका के सभी देशों की भाषा में प्रचलित है और सभी वर्ग के लोग तथा सभी विश्वास के लोग इस पुस्तक को पढ़ते हैं। इस पुस्तक की अपनी अलग उपयोगिता है, इस कारण इसकी मांग दिन प्रति दिन बढती जा रही है।

यह छोटी पुस्तिका अफ्रीका देश के जीवन-प्रथा एवं सोच-विचार के ढंग पर रची गई है और कई अफ्रीकी भाषाओं में छापी जा चुकी है, जिसके कारण यह अफ्रीका देशवासियों के घरों तथा वहाँ के लोगों के हृदयों में स्थान पा गई है। इस पुस्तक के पढ़ने से बहुतों ने पुराने नियम में दिये गये परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा की सत्यता का अनुभव किया कि, "मैं तुमको नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा" (यहेज ३६:२६)। नया नियम में इब्रानियों ८:१० में यह पूरा हुआ है।

मनुष्य का हृदय

परमेश्वर का मन्दिर या शैतान का कारखाना

(१ यूहन्ना ३:४-१०)

यह अन्य पुस्तकों से भिन्न एक ऐसी मन-दर्पण पुस्तिका है जो मनुष्य के हृदय की वास्तविक स्थिति का चित्रण करती है। यह पुस्तिका अपने चित्रों सहित प्रथम बार फ्रान्स देश में प्रकाशित की गई थी, और तब से यह अन्य देशों की भाषाओं में छापी जा चुकी है और हजारों मनुष्यों ने इसे पढ़ कर बड़ी आशीषें प्राप्त कीं। यह मन-दर्पण के समान काम में आने वाली उपयोगी पुस्तिका है जिसमें लोग अपनी वास्तविक आत्मिक दशा को उसी रीति से देख सकते हैं जैसा कि परमेश्वर उसे देखता है। बहुतों ने इन पृष्ठों में अपने आप को पापमय हृदय की दशा में पाया और उस समय से उन्होंने पश्चाताप किया और नया हृदय पाया और उनमें नई आत्मा आई।

Copyright ANGP

जब आप इस पुस्तक को पढ़ रहे हैं, तो कृपया इस बात का ध्यान रखें कि यह एक दर्पण के समान है जिसमें कि आप अपनी वास्तविक स्थिति को देख सकते हैं। चाहे आप अन्य धर्मों के मानने वाले हों या मसीही हों, अविश्वासी हों या अपने विश्वास से फिर गये हों, आप अपने चित्र को इसमें वैसा ही पाएंगे जैसा परमेश्वर उसे देखता है। "मनुष्य तो बाहर का रुप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है" (१ शमूएल १६:७)। परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता। वह मनुष्यों के हृदयों (मनों) को देखता है।

शैतान सब झूठों का पिता है। वह अन्धकार का सरदार और इस संसार का ईश्वर है, जो उजियाले के दूत में अपने को बदल लेता है और स्त्री तथा पुरुषों को धोखा देता रहता है और ठोकर खिला कर पाप में गिरा देता है। पुराने समय के समान इन दिनों में भी, बहुत से झूठे प्रेरित और धोखेबाज कार्यकर्त्तागण हो गये हैं, जो अपने को ख्रीष्ट के प्रेरितों में बदल लेते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिमय स्वर्गदूत का रुप धारण करता है (२ कुरिन्थियों

११:१३,१४) शैतान, जो अन्धकार का सरदार और इस संसार का ईश्वर है, लोगों के मनों की दृष्टियों को अन्धा कर देता है, कि वे परमेश्वर के प्रेम और महिमा को नहीं देख पाते और न वे पहिचान पाते हैं कि उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मारा गया कि उन्हें बचा ले। सभी पापी लोग तथा अविश्वासी परमेश्वर के सन्मुख अन्धे एवं मृतक के समान हैं और इस संसार के ईश्वर की आत्मा अर्थात शैतान का उन पर राज्य है (इफिसियों २:२)। जब तक उनकी आत्मिक आँखें उनकी इस खोई दशा के विषय में किसी रीति से खोली न जावे, तब तक वे सीधे अनन्त विनाश की ओर तीव्र गति से बढ़ते जायेगें। जो यह कहता है कि "मुझ में कोई पाप नहीं," वह अपने आप को धोखा देता है और उस में सत्य नहीं।"

"परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ, कि शैतान के कामों को नाश करे" (१ यूहन्ना ३:८)।

"इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा : हे पापियो, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदयों को पवित्र करो। दुखी होओ, और शोक करो, और रोओ : तुम्हारी हंसी शोक से और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए और प्रभु के सामनेदीन बनो" (याकूब ४:७-१०।)

जब आप इस पुस्तक को पढ़ते और उसके चित्रों का अध्ययन करते हैं, तो उस समय आप अपने हृदय की वास्तविक दशा को देख सकेंगे। परमेश्वर की ढूँढ़ने वाली ज्योति से अपने हृदय की दशा को इन्कार न कीजिए कि आप में पाप नहीं है, क्योंकि परमेश्वर का वचन हमें स्पष्ट बदलता है कि यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं। और हम में सत्य नहीं, परन्तु यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है (१ यूहन्ना १:८-९)।

"परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

Copyright ANGP

आपके ऊपर या तो शैतान का राज्य है या परमेश्वर का राज्य है आप या तो पाप के दास हैं या परमेश्वर के दास हैं। यदि आप के जीवन में पाप का राज्य है तो इसको मानने से इन्कार न कीजिए, वरन परमेश्वर की दोहाई दीजिए जो यीशु मसीह के द्वारा आप को स्वतंन्त्र करने को तैयार है, क्योंकि यीशु मसीह संसार में इसी लिए आया कि वह पापियों को बचावे और हमारे ऊपर से शैतान और पाप की शक्ति को तोड़े। मसीह ही हमारा छुटकारा है। आप पवित्र परमेश्वर के सामने उपस्थित हैं, जो सब के गुप्त बातों को देखता है और सब छिपे सोच-विचारों को समझता और जाँचता है। यह बिलकुल असम्भव है कि आप परमेश्वर से अपने आपको एवं अपने कार्यों को छिपा सकें, क्योंकि "जिसने कान दिया, क्या वह आप नहीं सुनता ? जिसने आंख रची, क्या वह आप नहीं देखता ?"

"देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ दिखाए।" (२ इतिहास १६:९)

"क्योंकि ईश्वर की आंखें मनुष्य के चालचलन पर लगी रहती हैं, और वह उसकी सारी चाल को देखता है। क्योंकि ऐसा अन्धियारा वा घोर अन्धकार कहीं नहीं है; जिसमें अनर्थ करने वाले छिप सकें।" (अय्यूब ३४:२१,२२)

"परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा क्योंकि वह सब को जानता था।" (यूहन्ना २:२४)

इसलिए "क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिस का पाप ढांपा गया हो। क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो।" (भजन संहिता ३२:१,२) (भजन संहिता ५१ को भी पढ़ें)।

यीशु आज भी बुला रहा है कि "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में

Copyright ANGP

दीन हूँ ; और तुम अपने मन में शान्ति पाओगे । क्योंकि मेरा जुआ सहज और मेरा बोझ हल्का है ।" (मती ११:२८-३०)

चित्रों का समझाना

चित्र पहिला

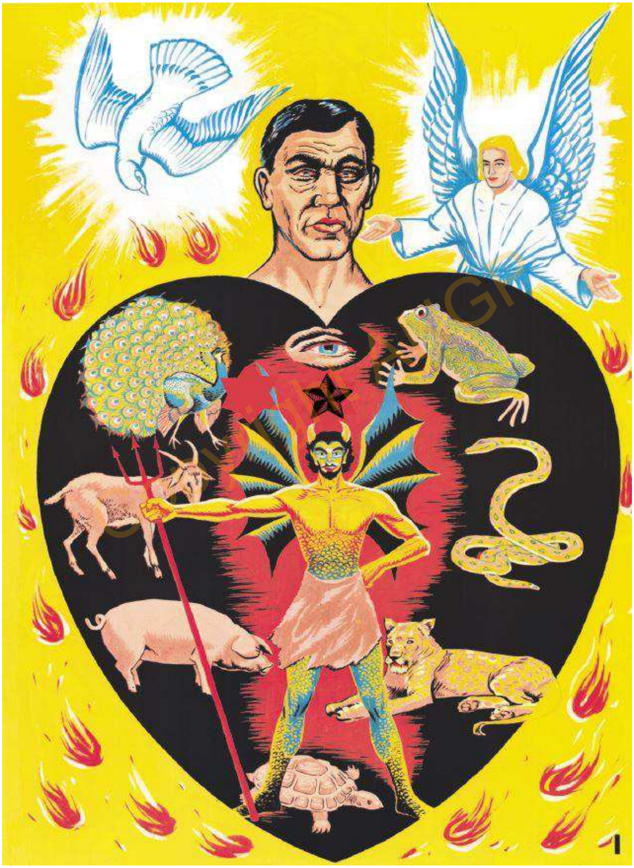

चित्र नं० १–पापी मनुष्य का हृदय

यह चित्र उन ससारिक एवं नया-जन्म रहित स्त्री-पुरुष के हृदय की दशा को प्रगट करता है, जिसे बाइबल नामक धर्म पुस्तक में पापी के

रुप में वर्णन किया गया है अर्थात जिनके ऊपर संसार की आत्मा का, शारीरिक कामनाओं एवं विलासों की प्रभुता रहती है। हृदय की यह वह सच्ची तस्वीर है जैसा कि परमेश्वर उसे देखता है। इस चित्र में झूमती लाल आँखें मतवालेपन को बतलाती है, जिसका वर्णन नीतिवचन २३:२९-३३ में किया गया है। "कौन कहता है, हाय ? कौन कहता हाय हाय ? कौन झगड़े-रगड़े में फंसता है ? कौन बक बक करता है? किसके अकारण घाव होते हैं ? किसकी आँखें लाल हो जाती हैं ? उनकी जो दाखमधु देर तक पीते हैं, और जो मसाला मिला हुआ दाखमधु ढूंढ़ने को जाते हैं। जब दाखमधु लाल दिखाई देता है, कटोरे में उसका सुन्दर रंग होता है, और वह धार के साथ उण्डेला जाता है, तब उसको न देखना। क्योंकि अन्त में वह सर्प की नाई डंसता है, और करैत के समान काटता है तू विचित्र वस्तुएं, देखेगा और उल्टी-सीधी बातें बकता रहेगा।"
इसी चित्र में सिर के नीचे जो मनुष्य का हृदय दिखाई दे रहा है, इसके भीतर कई विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं का बास दिखाया गया है, जो मनुष्य के हृदय में रहने वाले बहुत से भिन्न-भिन्न पापों को बताते हैं क्योंकि हृदय ही पापों का निवास-स्थान और बैठक स्थान है। परमेश्वर, यिर्मयाह नबी के द्वारा कहता है कि "मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देने वाला होता है, उसमें असाध्य रोग लगा है; उसका भेद कौन समझ सकता है ?" प्रभु यीशु आप भी इस कथन की पुष्टि करता है कि "भीतर से अर्थात मनुष्य के मन से बुरी बुरी चिन्ता, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अभिमान और मूर्खता निकलतीं हैं। ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुध्द करती हैं" (मरकुस ७:२१-२३)

(१) मोर पक्षी — एक तरफ जब की सभी मोर पक्षी की सुन्दरता की प्रशंसा करते हैं, परन्तु यहाँ मनुष्य के हृदय में यह घमण्ड, गर्व और अहंकार के पाप को प्रकट करता है। लुसीफर, भोर का चमकने वाला तारा, अभिषिक्त करुब, एक समय परमेश्वर का मशाल ले जानेवाला तथा परमेश्वर का महान दूत था, वह घमन्ड के कारण पतित होकर गिर गया और इस प्रकार परमेश्वर का शत्रु अर्थात शैतान बन गया (यशायाह १४:६-१७; यहेजकेल २८:१२-१७)

Copyright ANGP

घमण्ड नरक के खोह से आता है और कई रीति से अपने को प्रगट करता है। कुछ लोग धन-सम्पत्ति की बहुतायत पर घमण्ड करते हैं, कुछ अपनी उच्च शिक्षा स्तर पर, कुछ फैशनयुक्त कपड़ों के पहिरावे पर घमण्ड करते हैं, जिसमें उनके शरीर लज्जा की सीमा छोड़कर निर्लज्जता में खुले से दिख पड़ते हैं; कुछ अपने झनझनाते गहनों, चूड़ियों या अँगुठियों पर घमण्ड करते हैं जिनका वर्णन यशायाह ३:१७-२४ में ठीक ही किया गया है। कुछ लोग अपने पूर्वजनों की रीति रस्मों पर, राष्ट्रीयताओं, सांस्कृतियों, राष्ट्रीय खेल तमाशों आदि पर घमण्ड करते हैं: और यह भूल जाते हैं कि "परमेश्वर अभिमानियों का सामना करता है परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।" (१ पतरस ५:५)। परमेश्वर घमण्ड, अहंकार, बुरी चाल से और उलट फेर की बात करने वाले से घृणा करता है (नीतिवचन ८:१३) "विनाश से पहिले गर्व, और ठोकर खाने से पहिले घमण्ड होता है" (नीतिवचन १६:१८)

(२) बकरा—एक सड़ाहट, दुर्गन्धयुक्त, लम्पट और बुरी वासना पूर्ण पशु है और मनुष्य के शारीरिक वासना, विलासता अनैतिकता, व्यभिचार एवं परस्त्रीगमन जैसे पापों को बतलाता है। ये उपरोक्त पाप इस आधुनिक युग के अन्तिम दिनों में इतने बढ़ गये हैं कि हमें प्रभु यीशु २००० वर्ष पूर्व के कही वार्त्ता की सत्यता को मानना पड़ेगा कि इस संसार के अन्तिम दिन सदोम और गमोराह के दिन के समान होंगे। इस आधुनिक युग की आत्मा ने न केवल पुरुषों और स्त्रीयों को पकड़ रखा है, परन्तु धार्मिक लोगों को और धार्मिक संस्थाओं, स्कूली, कालेजों, विश्वविद्यालयों और विद्यार्थियों के रहने के स्थानों में घुस आया है। यह बिगाड़ने वाला नाशक वीज निर्लज्जता और बड़ी शैतानिक चालाकी और धूर्तता के साथ मनुष्यों के हृदयों में सिनेमा, जासूसी नाटकों एवं उपन्यासों और वासनायुक्त साहित्यिक पुस्तकों और पोस्टरों तथा अन्य कई दूसरी रीतियों से मनुष्यों के हृदयों में प्रवेश पाता जा रहा है और जिसे परमेश्वर अपने बचन में पाप कहता है, वही इस आधुनिक युग में नैतिकता और फैशन माना जाने लगा है। लाखों युवक-युवतियाँ अपने जीवन का

Copyright ANGP

आदर्श इन सिनेमा, चित्रपटों और उपन्यासों से निर्माण कर लेते हैं परन्तु आगे चलकर उन्हें संकट, लज्जा, शोक और निराश होना पड़ता है। अनैतिक तथा उच्छृंकल जीवन व्यतीत करने वाले सिनेमा-पात्र, खिलाड़ी और तारा-तारिकाएं आधुनिक युवा पीढ़ी के बहादुर और बहादुरनियां बन जाते हैं। नाच-घर अक्सर अनैतिकता और बुरे कार्यों के उत्पादन स्थान बन गए हैं। यूसुफ जैसे परमेश्वर की पवित्रता के वीरगण अब आदर्श पात्र नहीं गिने जाते हैं। यहां तक कि अफ्रीका देश के अपढ़ पुरातन ज़ूलू जाति भी जो व्यभिचारिणियों को मार डालती थी, वे भी इस आधुनिक युग में के सभ्य कही जाने वाली पीढ़ी के लोगों को सिखा सकते हैं और न्याय के दिन हमारे विरुद्ध खड़े होकर हमें दोषी ठहरा सकते हैं। परमेश्वर कहता है कि हम व्यभिचार से न खेलें बरन उससे दूर भागें। "व्यभिचार से बचे रहो, जितने और पाप मनुष्य करता है, वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करने वाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है। क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो ? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो (१ कुरि० ६:१८-२०)।

"यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे भी नाश करेगा, क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है और वह तुम हो" (१ कुरि० ३:१७)।

(३) सुअर-मद्यपान और पेटूयन के पापों को बतलाता है। यह एक गन्दा पशु है, जो अपने रास्ते पर आने वाली सभी चीजों को निगल जाता है, चाहे वह शुद्ध हो वा अशुद्ध हो। इसी प्रकार से पापमय हृदय वाला व्यक्ति भी प्रत्येक अशुद्ध सुभाव-संकेत, अशुध्द विचार और बोली, अश्लील तस्वीरें, तथा अश्लील पुस्तक-पुस्तिका आदि को निगल जाता है। हमारा शरीर जो जीवते परमेश्वर का मन्दिर, अशुध्द भोजन, मद्यपान, अशुद्ध आदतों से जैसे बीड़ी-सिगरेट पीना, पान व तम्बाखू खाना, अफीम तथा अन्य दूसरे हानिकारक दवाईयों का सेवन करने से बिगड़ जाता है। तम्बाखू पीने और अफीम खाने की आदत ने पुरुष एव स्त्रीयों को आज ऐसा पकड़ रखा है जैसे कि पहले कभी नहीं पकड़ा था।

Copyright ANGP

सिर्फ परमेश्वर की आत्मा की सामर्थ ही है जो ऐसे तम्बाखू के शिकार और शैतानिक आदतों से पूर्ण छुटकारा दे सकता है। बहुत से धार्मिक सोचविचार रखने वाले लोग गिर्जा-घरों वा अन्य धार्मिक स्थानों में तम्बाखू या मद्यपान का सेवन करने का साहस न करें, क्योंकि वे अपने विवेक में सोचते हैं कि ऐसा करने से परमेश्वर तथा धार्मिक स्थान की पवित्रता का उल्लंघन करते हैं, तोभी अन्य स्थानों में वे इस सड़े पौधे अर्थात तम्बाखू और अन्य नशीली वस्तु का सेवन करके अपने शरीर को जो परमेश्वर का सत्य मन्दिर है, अशुद्ध करने में संकोच नहीं करते और न उनका हृदय इससे दुखित होता है। प्रेरित पौलुस कहता है कि "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में बास करता है ? यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नाश करेगा तो परमेश्वर उसे नाश करेगा, क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो" (१ कुरि॰ ३:१६,१७;६:१८,१९)।

Copyright ANGP

पेट्ट मनुष्य भी परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है। हम जीने के वास्ते खाते हैं, हम इसलिये नहीं जीते हैं कि खावें। भूख सन्तुलित भोजन करने से तृप्त हो जाती है, परन्तु शरीर की अभिलाषा सदैव पुकारती है, दे, दे।

शरीर की विलासता कभी भी सन्तुष्ट नहीं होती, न कभी तृप्त होती है। पुराने नियम के अनुसार पेट्ट और पियक्कड़ को पत्थरवाह करने की आज्ञा दी जाती थी। (व्यवस्थाविवरण २१:१६-२१)

"क्योंकि पियक्कड़ और खाऊ अपना भाग खोते हैं, और पीने वाले को चिथड़े पहिनने पड़ते हैं। उडाऊ का संगी अपने पिता का मुंह काला करता है" (नीतिवचन २३:२१;२८:७)। उस धनवान मनुष्य को स्मरण कीजिये जो पेट्ट, खाऊ और अपने शारीरिक विलासों का दास था और जब वह मर गया तो उसने नरक में पड़े अपनी आँख उठाई और अपने को वर्णन से बाहर पीड़ा में पड़ा पाता है। नशीली चीजों के सेवन से जो बुराईयाँ उत्पन्न होती हैं उनको बताने की शायद ही आवश्यकता है। सभी जानते हैं कि इसे हम हल्की सी बात नहीं समझ सकते हैं। परमेश्वर अपने वचन से स्पष्ट कहता है कि कोई पियक्कड़ परमेश्वर के राज्य का वारिश नहीं होगा। शराब भोजन नहीं है, परन्तु यह बिनाशकारी नशीली

वस्तु है जो शरीर और मन को भ्रष्ट करती है ताकि उसके सेवन करने वाले मूर्खता के काम करें। वे अनैतिक हो जाते हैं ताकि उसके सेवन करने वाले मूर्खता के काम करें। वे अनैतिक हो जाते और यहाँ तक कि दूसरों की हत्या भी कर डालते हैं, जिसे वे बिन शराब पीने की दशा में कभी न करते। "दाखमधु ठट्ठा करने वाला और मदिरा हल्ला मचाने वाली है, जो कोई उसके कारण चूक करता है वह बुद्धिमान नहीं" (नीतिवचन २०:१)।

वे जो शराब बनाते हैं और बेचते हैं परमेश्वर के सामने उतने ही अपराधी गिने जाते हैं, जितना कि शराब के पीने वाले, क्योंकि परमेश्वर कहता है कि "हाय उन पर जो दाखमधु पीने में वीर और मदिरा को तेज बनाने में बहादुर हैं" यशायाह ५:२२)

"हाय उस पर जो अपने पड़ोसी को मदिरा पिलाता, और उसमें विष मिलाकर उसको मतवाला कर देता है कि उसको नंगा देखे" (हबक्कूक २:१५)।

"उनकी जेवनारों में वीणा, सारंगी, डफ, बांसुली और दाखमधु, ये सब पाये जाते हैं, परन्तु वे यहोवा के कार्य की ओर दृष्टि नहीं करते, और उसके हाथों के काम को नहीं देखते" (यशायाह ५:१२)।

"क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ, न वेश्यागामीं, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी न लुच्चे न पुरुषगामी। न चोर, न लोभी, न पियक्कड़, न गाली देने वाले, न अन्धेर करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे" (१ कुरि0 ६:९-१०)।

संसारिक स्वभाव के पापों को पहिचानने में गलती नहीं होती। "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा. टोना, बैर. झगड़ा, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध. विरोध. फूट, विधर्म डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके ऐसे और और काम हैं। वे जो इन बातों के अपराधी हैं किसी रीति से भी परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे, न ही उसमें स्थान पा सकते हैं (गलतियों ५:१९-२१)।

इसलिये "दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन

Copyright ANGP

होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" (इफिसियों ५:१८) प्रभु यीशु आज भी प्यासों को यह निमत्रण देकर बुला रहा है "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए। जो मुझ पर विश्वास करेगा. जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां वह निकलेंगी" (यूहन्ना ७:३७-३८)। यशायाह नबी के द्वारा परमेश्वर कहता है कि "अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ, और जिसके पास रुपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ। दाखमधु और दूध बिन रुपये और बिन दाम ही आकर ले लो" (यशायाह ५५:१)।

यीशु ने कहा "जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा : वरन् जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें से एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा" (यूहन्ना ४:१४)।

(४) कच्छुवा-यह आलस्यपन, टालमटोलापन और भूतसिद्धि एवं टोन्हा-टोटकापन को बतलाता है। बैबल धर्मशास्त्र में पढ़ते हैं कि "आलसी अपनी लालसा में ही मर जाता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इन्कार करते हैं।" (नीतिवचन २१:२५)। अविश्वास टोन्हापन के पाप के तुल्य है। यहोशू को इस्त्राएल जाति से यह कहना पड़ा कि "इस देश को अपने वश में कर लेने में बहुत आलस न करो"। मनुष्य स्वभाव से इतना आलसी है कि वहप रमेश्वर की चीजों को सरलता सेपा नहीं सकता। प्रभु यीशु ने कहा कि "सकेत द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो" (लूका १३:२४)। "जो ढूंढ़ता है वह पाता है"। "स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है और बलवान उसे छीन लेते हैं"(मत्ती ११:१२)।

मनुष्य यदि उद्धार एवं आत्मिक कल्याण के विषय में आलसपन करता है तो वह निश्चय उसे विनाश की ओर ले जाता है। आलसपन का पाप ही हमको प्रार्थना करने से, परमेश्वर के विषय में गहरी बातों को ढूंढ़ने से, परमेश्वर की आशीषमय प्रतिज्ञाओं को धारण करने एवं अपनाने से रोकता है, और इससे सर्वनाश ही होता है। जब परमेश्वर की आत्मा ने आपसे बातें की और यह उत्तेजना उत्पन्न की कि अपने दिल को आज ही उसको अर्पण कर दें. तब शैतान आलस्य उत्पन्न करता और यह कार्य

Copyright ANGP

कल या किसी दूसरे दिन करने को कहता है, जो हाय ! शायद जीवन में कभी न आवे, और आप उद्धार का अनुभव किये बिना और मसीह के बिना ही मर जावेंगे। परमेश्वर अपने वचन में कहता है कि "यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो" (इब्रानियों ३:७-८)। कितने मनुष्य इसीलिए नाश हो गए कि उन्होंने अपना उद्धार किसी दूसरे उचित अवसर के आने तक टाल दिया और हाय उनको वह उचित मौका फिर कभी न मिला। भविष्य या कल का दिन सभी के लिए अनिश्चित है।

कच्छुवे की ऊपरी खोतली बहुधा टोन्हे-टोटकों तथा जादूगरों द्वारा उपयोग में लाई जाती है, जो हमें टोन्हा, जादू, भावीवार्ता, भूत सिद्धि, पर विश्वास एवं भरोसा करने वाले पाप के कार्य को बतलाता है और जीवते परमेश्वर पर विश्वास तथा भरोसा रखने से विमुख करती है। विशेषकर परीक्षा. जांच, दुःख-बीमारी, विलाप और शोक के समय, हमें जीवते परमेश्वर की दोहाई देनी चाहिये और छुटकारे के लिए उस पर भरोसा रखना चाहिये, न कि अपने अच्छे या बुरे भाग्य पर भरोसा करें, क्योंकि परमेश्वर सदैव सहायता करने को तैयार रहता है। भजन संहिता ३६:२३ में पढ़ते हैं कि "भले की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती हैं।" "क्योंकि बढ़ती न तो पूरब से न पच्छिम से और न जंगल की ओर से आती है, परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है, वह एक को घटाता और दूसरे को बढ़ाता है" (भजन संहिता ७५:६,७)।

याकूब अपनी पत्री में कहता है कि "यदि तुम में कोई रोगी हो, तो कलीसिया के प्राचीनों को बुलाए, और वे प्रभु के नाम से उस पर तेल मल कर उसके लिये प्रार्थना करें। और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा, और यदि उसने पाप भी किए हों, तो उनकी भी क्षमा हो जाएगी। इसलिये तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लो, और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करो, जिस से चंगे हो जाओ, धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है" (याकूब ५:१४-१६)।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को यह आज्ञा दी थी कि "तुम में से कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे व बेटी को आग में होमबलि करके चढ़ाने वाला

Copyright ANGP

व भावी कहने वाला, व टोन्हा, व तान्त्रिक, व बाजीगर व ओझों से पूछने वाला, व भूत साधने वाला व भूतों का जगाने वाला हो। क्योंकि जितने ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं" (व्यवस्थाविवरण १८:१०-१२)।

"पर कुत्ते और टोने, और व्यभिचारी, और हत्यारे और मूर्ति-पूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला. और गढ़ने वाला बाहर रहेगा" (प्रकाशितवाक्य २२:१५)।

"तुम ओझाओं और भूत साधने वालों की ओर न फिरना, और ऐसों की खोज करके उनके कारण अशुद्ध न हो जाना. मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ" (लैव्यव्यवस्था १९:३१)।

"जब लोग तुम से कहें कि ओझाओं और टोन्हों के पास जाकर पूछो जो गुनगुनाते और फुसफुसाते हैं' तब तुम यह कहना कि क्या प्रजा को परमेश्वर ही के पास जाकर न पूछना चाहिये ? क्या जीवतों के लिये मुर्दों से पूछना चाहिये ? व्यवस्था और चितौनी की ही चर्चा किया करो ! यदि वे लोग इन वचनों के अनुसार न बोलें तो निश्चय उनके लिये पौ न फटेगी" (यंशायाह ८:१९,२०)।

जब की आप इस छोटी पुस्तक को पढ़ रहे हैं, परमेश्वर आप से बोल रहा है, और आप को बुला रहा है कि अपने पापों से पश्चाताप करके अपने जीवन को उसके सन्मुख समर्पण कर दें, परन्तु कच्छुवे की आत्मा: जो हृदय में है, आपके हृदय में अनेकों प्रकार के सूझाव डालतीं हैं कि परमेश्वर के प्रति आप अपने निर्णय को टालते जावें और इस तरह आपके हृदय में डर भर दे।

आप यह सोचने लगते हैं कि मेरे मित्रगण, मेरे परिवार के लोग तथा समाज और संसार क्या कहेगा यदि मैं सच्चा मसीही बन जाऊ ? क्या होगा यदि मैं नाच-रंग, खाने-पीने व शराब की पार्टीयों और सांसारिक मनोरंजनों में भविष्य में भाग न लूं ? आप यीशु मसीह के उन अथाह धनों को देखने के बदले, एंव उसके आश्चर्यजनक शान्ति, अकथनीय आनन्द, उसकी महिमा, अनन्त जीवन सुख आदि को देखने के बदले, उन बातों की ओर देखने लगते और ध्यान देने लगते हैं, जिन्हें आप को यीशु ख्रीष्ट को हृदय में आने देने के बाद खोना और परित्यागन पड़ेगा। जब कि

Copyright ANGP

मनुष्यों का डर और मृत्यु का भय आप को निरन्तर शैतान के बन्धन में जकड़े रखना चाहता है। प्रभु ख्रीष्ट इस संसार में इसी लिये आया कि जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फंसे थे, उन्हें छुड़ा ले" (इब्रानियों २:१५)। परन्तु टालने और संकोच की आत्मा आप के हृदय को कड़ा और कठोर बना रही है, जब तक कि वह कच्छुवे की ऊपरी खोतली के समान कड़ा व कठोर न हो जावे।

(५) चीता—एक अति भयंकर और क्रूर जानवर है। घृणा, क्रोध और शीघ्र बुरा मानने वाला स्वभाव बहुधा मनुष्यों के हृदय पर राज्य करता है और अक्सर यह हत्या करने को प्रेरित कर देता है। इस बद-मिजाज स्वभाव को आप विशेष प्रबन्ध व कोशिश के द्वारा उस समय तक वश में कर सकते हैं जब तक कि वह अचानक अपने भयंकर रूप में तीव्रगति फूट न निकलेगा। अच्छा तो यह है कि आप अपने क्रोधित स्वभाव को मान लें और यीशु से प्रार्थना करें कि वह आप को इससे छुटकारा देवे और आप इस पर जय पायें। परमेश्वर के वचन में पढ़ते है कि "तुम्हारी आँखों में क्रोध न पाया जाए" उत्पति ४५:५)।" क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे! मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी.(भजनसंहिता ३७:८) "क्रोध तो क्रूर और प्रकोप धारा के समान होता है, परन्तु जब कोई जल उठता है तो कौन ठहर सकता है?" (नीतिवचन २७:४) "अपने मन में उतावली से क्रोधित न हो, क्यों कि क्रोध मूर्खो ही के हृदय में रहता है इस लिए अपने मन से खेद (क्रोध) और अपनी देह से दुःख दूर कर" (नीतिवचन ७:९,११:१०)।

"अब तुम इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैरभाव, निन्दा और मुंह से गालियाँ बकना छोड़ दो "कुलिस्सियों ३:८)

बहुत से लोग अपने क्रोध को आगे चलकर बदला लेने की भावना से ठण्डा कर देते हैं, परन्तु "उनका दाखमधु सांपों का सा विष और काले नागों का सा हलाहल ठहरता है (व्यवस्थाविवरण ३२:३३)।
क्रोध में आकर पापी हृदय को बदला लेना मधुर लगता है, परन्तु ऐसों से परमेश्वर ही बदला लेकर छुटकारा करता है। प्रभु यीशु ने कहा कि अपने "पड़ोसी को अपने समान प्यार कर और अपने शत्रु को भी प्रेम रख"। परमेश्वर ने हमारे पापों को क्षमा करने की प्रतिज्ञा तभी की है जब हम

Copyright AIGP

उनको क्षमा करें जो हमारे विरूद्ध अपराध करते हैं । शीघ्र क्रोधित और कुड़कुड़ाने वाली आत्मा से भी परमेश्वर घृणा रखता है । रक्त बहाने और युद्ध करने की बुरी बासना मनुष्य के हृदय से उठतीं हैं ,इस लिए यदि मनुष्य जाति को बहुत समय तक चलना है तो सच्ची शान्ति भी मनुष्य के हृदय में ही स्थापित होनो जरूरी है ।

(६ सर्प—शैंतान ने सर्प का रूप धारण कर अदन के बगीचे में हव्वा को ठगा और परमेश्वर के साथ आदम और हव्वा के मधुर संगति और सम्बन्ध को बिगाड़ दिया । शैंतान जो पतित स्वर्गदूत है, आदम और हव्वा के प्रति ईर्ष्या और जलन की भावना से भर गया, जब उसने देखा कि वे संसार के ऊपर प्रभुता करते हैं और परमेश्वर के साथ उनका पूर्ण धार्मिक सम्बन्ध है । शैंतान ने लूसीफर का जो भोर के चमकने बाले तारे के समान दूत था, उसकी जगह ले ली और ईर्ष्या से भर कर उसने आदम और हव्वा के नाश करने की योजना रची और परमेश्वर के साथ उनके अद्भुत संगति सहभागिता और आनन्दित जीवन को नाश करने में सफल हुआ । वही शैंतानिक जलन और ईर्ष्या मानव जाति के हृदय में आज भी पाई जाती है, और कुछ लोग इस बात की ताक में रहते हैं कि कैसे दूसरों की खुशी, सुख तथा आराम को नष्टकर दे (श्रेष्ट गीत ८:६ में पढ़ते हैं कि "ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है," ईर्ष्या मनुष्य के हृदय में दूसरों के सुख-आनन्द को नाश करने के बुरे विचारों को लाती है, और हत्या करने को भी अग्रसर करती है । ये विशेष घटना वैवाहिक जीवन में प्रायः हुआ करती है । व्यापार और जीवन के दूसरे कार्य क्षेत्र में यह अकथनीय दुःख और घृणा को उत्पन्न करता है । यहाँ नक की मसीही कार्यकर्त्ता, प्रचारक और धार्मिक अगुवे और सेवक ईर्ष्या के कूप्रभाव से बच नहीं सके हैं, जब वे देखते हैं कि परमेश्बर दूसरे को उनसे अधिक उपयोग कर रहा है । उनके लिए भलाई इसी में है कि वे इस बात की निरन्तर चौकसी रखें और ईर्ष्या तथा जलन के पापों से अपने को बचाएं रखें और वे परमेश्बर के पवित्र प्रेम से भर जाएं जो कि पवित्रत्मा द्वारा हमारे हृदयों में बसाया गया है । कहीं ऐसा न हो कि उनकी परमेश्वर के काम के लिए उपयोगिता इस शैंतानिक आत्मा के आने से बिगड़ जावे ।

(७) मेंढक—मिट्टी खाता है । यहां लालचपन और रूपये के लोभ के पाप

Copyright ANGP

को बतलाता है जो सारी बुराई की जड़ है (१ तिमोथी ६:१०)। कान्गो देश में कुछ ऐसे भी मेढक पाए जाते हैं जो चीटियों को यहां तक खाते हुए पाए गए हैं कि उनका पेट फट गया और वे मर गए। लोभी और लालची मनुष्य निर्धनों और असहायों की मदद करने को तैयार नहीं होते, और न ही अपने दिल से हाथ खोल कर दान देने के इच्छुक होते हैं, परन्तु वे हर सम्भव तरीके से-क्या वह भली वा धोखेबाजी का हो, इस संसार के धन दौलत को जमा करने और बढ़ाने का प्रयत्न किया करते हैं, और भूल जाते हैं कि अन्त में ये कीड़े और काई द्वारा नष्ट हो जावेंगे।

प्रभु यीशु ने स्वयं कहा " अपने लिए इस पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और चोर सेंध लगाते और चुराते हैं, परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा किया करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और न जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। क्यों कि जहां तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा "(मत्ती ६:१९-२१)। आकान अपने घरानों समेत इस लिए नाश हुआ क्योंकि उसने अपना मन सोना-चाँदी और बहुमूल्य पत्थर और कीमती बस्त्रों के प्राप्त करने में लगा (यहोशू ६)।

यहूदा इस्कारयोती, जो यीशु के चेलों में से एक था, अपने आप को फांसी लगा कर आत्म हत्या कर ली, क्योंकि धन के लोभ ने उसको अपने प्रभु और गुरु को पकड़वाने वाला बना दिया। धन अपने में बुरा नहीं है, परन्तु धन का लोभ जो मनुष्य के हृदय में छिपा रहता है वह बुराई की जड़ है, और इसके वश में आकर मनुष्य अनेकों अनुचित कार्य करता रहा है।

सभी वर्गों और जातियों और वर्णों में सहस्त्रों पुरूष और स्त्री अपने एंव अपने कुटुम्ब के जीवनों को नाश कर रहे हैं क्योंकि बुरी इच्छा की प्रबलता से वे जुआ खेलने, घुड़दौड़ या कुत्ता प्रदर्शन आदि से अचानक बड़ी मात्रा में धन प्राप्त करने की लालसा लगाए रहते हैं कि अचानक धनी बन जावें। बिना पसीना बहाये और परिश्रम किए बिना अचानक धनी बन जाने की इच्छा व्यक्ति को चोरी, हत्या एंव आत्महत्या करने को विवश करती है। धन के लोभी के अनेकों साथी बन जाने हैं, जसे यश की प्राप्ति और अधिकार चाहने वाले, चाहे वह राजनैतिक अधिकार शक्ति हो ताकि दूसरों पर शासन करें या आर्थिक अधिकार शक्ति हो ताकि

Copyright ANGP

निर्धनों को दबाएं और पीसे या धार्मिक शक्ति हो जिसके द्वारा परमेश्वर की सेवा करने के बजाय मण्डली के नाम से अपनी संस्था की सेवा में उत्साह दिखावें और उन सन्तों को नीचा दिखाते हुए अपराधी ठहरावें जो उन की संस्था में सम्मिलित न होकर मसीह के पीछे चलने की हिम्मत दिखलाते है (मरकुस ९:३८)। प्रभु यीशु ने कहा "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता"।

(लूका १२:१५)। एक धनी मूर्ख की कहानी इस प्रकार से बतलाई गई है। "किसी धनवान मनुष्य की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में यह विचार करने लगा, कि मैं क्या करू क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उसने कहा, मैं यह करूंगा: मैं अपनी बखारियाँ तोड़ कर उनसे बड़ी बनाऊंगा, और वहाँ अपना सब अन्न और संम्पत्ति रखूंगा: और अपने प्राण से कहूँगा कि हे प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत संम्पत्ति रखी है, चैंन कर खा पी और सुख से रह। परन्तु परमेश्बर ने उस से कहा, हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा ? ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए तो धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं है" लूका (१२:१६-२१)। "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा" (मरकुस ८:३६-३७) यीशु ने फिर कहा "अपने प्राण की चिन्ता न करो, कि हम क्या खायेंगे, न अपने शरीर की कि क्या पहिनेंगे। क्योंकि भोजन से प्राण, और वस्त्र से शरीर बढ़कर है.... परन्तु परमेश्वर के राज्य की खोज में रहो, तो यह वस्तुएं भी तुम्हें मिल जायेंगी, अपने लिए स्वर्ग पर ऐसा धन इकट्ठा करो जो घटता नहीं और जिसके निकट चोर नहीं जाता, और कीड़ा नही बिगाड़ता। क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा" (लूका १२:२२-३४)।

(८) शैतान. सब झूठों का पिता है और उनका भी जो झूठ गढ़ते है। वह विभिन्न प्रकार के पापों को कराने के लिए उभारने वाला है, और लोगों के हृदय पर राज्य करने वाला है। यीशु कहता है "तुम अपने पिता

शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं, जब वह झूठ बोलता है तो अपने स्वभाव से ही बोलता है, क्योंकि वह झूठा है, बरन झूठ का पिता है" (यूहन्ना ८:४४)।

झूठ, झूठ है। चाहे वह एक झूठ हो अथवा बहुत। चाहे वह सफेद झूठ हो अथवा काला झूठ हो। ऐसे भी झूठ हैं जो नित्य बोलें, लिखे और किये जाते हैं। एक कपटी झूठा होता है परन्तु वह ऐसा ढोंग रचता है कि मानों वह झूठा है ही नहीं। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता है, वैसे ही उसके जन अर्थात मसीही भी झूठ नहीं बोल सकते (तितुस १:२)। "यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चले, तो हम झूठे हैं, और सत्य पर नहीं चलते" (१ यूहन्ना १:६)। "पर कुत्ते, और टोन्हें, और व्यभिचारी और हत्यारे और मूर्तिपूजक, और हर एक झूठ का चाहने वाला और गढ़ने वाला बाहर रहेगा" (प्रकाश २२:१५)।

"छ. वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिनसे उसको घृणा है अर्थात घमंड से चढ़ी हुई आँखे, झूठ बोलने वाली जीभ, और निर्दोष का लोहू बहाने वाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़ने वाला मन बुराई करने को वेग से दौड़ने वाले पाँव, झूठ बोलने वाली साक्षी और भाईयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करने वाला मनुष्य" (नीतिवचन ६:१६-१९]।

(९) तारा—हर मनुष्य के हृदय के अन्दर के विवेक को बतलाता है। यहाँ तस्वीर में तारा अशुद्धता और बुराई एवं मृत्यु की दशा को बतलाता है। जानबूझ कर पाप करने के द्वारा मनुष्य की आँखे ऐसी अन्धी हो जाती हैं कि वह अपने किए हुए कार्यों को पहिचान नहीं पाता है। यह बुरा विवेक कभी शान्त रहता है तो कभी चिन्ता से दुखित रहता है। वह अपराधी ठहराता है जबकि उसे क्षमा करना चाहिए और क्षमा करता है जब उसे दोषी ठहराना चाहिए। ऐसा विवेक शायद गरम लोहा से दागा गया है और विश्वास से दूर होने के कारण उसमें चैतन्य और सुद्ध बुद्ध की भावना खो गई है क्योंकि आप ने बहकाने वाली आत्माओं और शैतान के सिद्धान्तों की ओर ध्यान दिया और कुटिलता से झूठ बोला है। "आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग

Copyright ANGP

भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जायेंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा. जिनका विवेक मानों जलते हुए लोहे से दागा गया हैं" (१ तिमोथी ४:१-२) (इब्रानियों १०:२२]।

(१०) आंख—परमेश्वर की आंखें मनुष्य के हृदय और जीवन की सभी बातों को देखती हैं। उसकी ज्वालामय आँखों से कुछ भी छिपा नहीं है, इसलिये वह मनुष्य के हृदय में पाई जाने वाली सभी गुप्त भावनाओं और विचारों को भलि-भाँति जानता और देखता है। चाहे ये बुरे काम आप ने घोर अन्धकार में किए हों, घने जंगल में किए हों, चाहे किसी गहरे गड्डे में किए हों, परमेश्वर की आंखें सभी देखती हैं और उससे कुछ भी छिपा नहीं है। चित्र में आँख मनुष्य के चेहरे के रूप को भी बतलाती है।

(११) आग की सी छोटी जीभें—यह परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करती हैं जो पापी हृदय को चारो तरफ से घेरे हुए हैं। जब की परमेश्वर पाप से घृणा करता है तो वह मनुष्य से प्यार भी करता है, और उसकी मृत्यु से प्रसन्न नहीं होता है, परन्तु यह चाहता है कि पापी मनुष्य पश्चाताप करे और जीवित रहे। प्रभु यीशु इस संसार में पापियों को ही बचाने आया। एक पापी के मन फिराने से स्वर्ग में बड़ा आनन्द होता है आग की सी छोटी जीभें यीशु के लोहू को भी बतलाती हैं।" यीशु परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत कां पाप उठा ले जाता है' (यूहन्ना १:२९)।

(१२) स्वर्गदूत—परमेश्वर के वचन को बतलाता है। परमेश्वर चाहता है कि पाप के बोझ से दबे हुए सभी पुरुषों एवं स्त्रीयों से बातचीत करे, जिससे वे पश्चाताप करें और परमेश्वर के प्रेम तथा ज्योति को अपने हृदय में आने दें।

(१३) कबूतर—पवित्रता एवं सत्य की आत्मा का चिन्ह है जो पाप और धार्मिकता और परमेश्वर के प्रति मनुष्य को निरूत्तर करता है। पवित्रात्मा यहां मनुष्य के हृदय के बाहर हैं। पवित्रात्मा वहाँ रह नहीं सकता है जहाँ पाप राज्य करता है।

Copyright ANGP

यदि इस चित्र में दर्शायें गये हृदय का वर्णन आप के हृदय की दशा को प्रगट करता है और उससे मिलता है, तो आप परमेश्वर की दोहाई दें। प्रभु के सामने अपने हृदय को खोल दें और उसके वचन की ज्योति को अपने हृदय में चमकने दें। "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू उद्धार पाएगा" (प्रेरित १६:३१)। परमेश्वर चाहता है और तैयार भी है, क्योंकि आप के हृदय को बदलने की उसने प्रतिज्ञा की है, कि आप के

चित्र नम्बर २

अन्दर नया हृदय और नई आत्मा देवे। दूसरे चित्र में इस बात पर ध्यान देंगे।

यह चित्र एक पश्चातापी हृदय को बतलाता है जो परमेश्वर को ढूढ़ना आरम्भ करता है। स्वर्गदूत एक तलवार पकड़े हुए है जो परमेश्वर का वचन है। "परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल और हर एक दो धारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है" (इब्रानियों ४:१२)। परमेश्वर का बचन उसे याद दिलाता है कि "पाप की मजदूरी मृत्यु है" और कि "मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है"। (इब्रानियों ६:२७)। सभी पापियो और अविश्वासियों का भाग आग की झील में होगा जो आग और गन्धक से जलती है।

अपने दूसरे हाथ में स्वर्गदूत एक खोपड़ी पकड़े हुए है। जो पापी को स्मरण दिलाती है कि हम सभी को मरना है। हमारी यह देह जिसको हम इतना प्यार करते, सुन्दर कपड़े पहिनाते, खिलाते-पिलाते और संवारते हैं, उसकी देख-देख करते और ध्यान देते हैं, ताकि वह शारीरिक वासना और उसकी मांगों की पूर्ति कर सके, परन्तु एक दिन यह पार्थीव शरीर मर जाएगा और मिट्टी में मिलकर सड़ जाएगा, जब की हमारी आत्मा और जीवात्मा हमेशा के लिए जीवित रहेगी, और एक दिन उसे परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा।

यहां हम देखते हैं कि पापी परमेश्वर के वचन के संदेश पर ध्यान देना आरम्भ करता है और परमेश्वर के प्रेम के प्रति अपने हृदय को खोलता है। पवित्रात्मा उसके पापी और अन्धेरे हृदय में चमकना आरम्भ करता है। परमेश्वर का उजियाला उसके मन मन्दिर में प्रवेश कर सब अन्धकार को निकालता है। जब परमेश्वर का उजियाला भीतर आता है, तब अन्धेरे को बाहर निकलना ही पड़ता है। पाप को जो यहां कई विभिन्न प्रकार के जानवरों से चित्रित किया गया है, भागना पड़ता है। इसलिए प्रिय पाठक, यीशु मसीह को जो जगत की ज्योति है, अपने हृदय में प्रवेश करने दीजिए और पापमय अन्धकार के कामों को हृदय से छोड़

दीजिए, जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है। प्रभु यीशु ने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं, जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा. वरन जीवन की ज्योति पाएगा" (युहन्ना ८:१२)। आप अपने स्वयं के प्रयत्न स्वयं की समझ बुद्धि के सहारे अपने हृदय के अन्धकार को दूर करने में सफल नहीं होंगे। सब से सरल, सब से निश्चय, सब से शीघ्र और सबसे अधिक प्रभावशाली एक ही तरीका यह है कि आप यीशु जो ज्योति है,,अपने हृदय में प्रवेश होने दें, और अन्धकार जो पाप है, निकलना ही पड़ेगा। चन्द्रमा और तारागण अन्धेरी रात्रि में हमारी कुछ सहायता कर सकते हैं, परन्तु जब सूर्य उदय हो चुका है, तब अन्धकार और छोटी-छोटी रोशनियाँ छिप जाती हैं या लोप हो जातीं हैं। प्रभु यीशु ही धर्म का सूर्य है जिसकी किरणों के द्वारा लोग चंगे हो जाते हैं और पाप का अन्धकार निकाला जाता है। जब यीशु यरुश्लेम के मन्दिर में प्रवेश किया; तो उसने उन सभों को मन्दिर से बाहर निकाल दिया जो बैल, भेड़ और कबूतरों का व्यापार करते थे, और रुपये-पैंसे भजाने वालों की चौकियों को उलट दिया और कहा "लिखा है कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलायेगा परन्तु तुम ने इसे डाकुओं की खोह बना डाला है" (मत्ती २१:१३)। आप का हृदय इसलिए बनाया गया है कि वह परमेश्वर का पवित्र मन्दिर और घर बना रहे। परमेश्वर उसमें रहना चाहता है, उसे सुन्दर बनाना चाहता है, उसे अपनी ज्योनि, प्रेम तथा खुशी से भरपूर करना चाहता है। प्रभु यीशु न केवल हमारे पापों को क्षमा करने को आया, परन्तु वह हमें पाप के बन्धन, उसकी शक्ति तथा राज्य से छुटकारा देने और स्वतन्त्र कराने को भी आया। "सो यदि पुत्र (यीशु) तुम्हें स्वतन्त्र करेगा तो सचमुच में तुम स्वतन्त्र हो जाओगे" (यूहन्ना ८:३६)।

यह चित्र एक सच्चे पश्चातापी पापी मनुष्य के हृदय की दशा को बतलाता है। अब वह उन बहुतेरे पापों से घृणा करता है जो डरावनेपन को दिखाता है जिसके कारण यीशु क्रूस पर मारा गया। ज्योंहि वह क्रूस पर दृष्टि करता है, जिसे स्वर्गदूत अर्थात परमेश्वर का वचन उस पर प्रगट करता है, तो वह क्रूस उसके हृदय को तोड़ देता है और वह अपने अनेकों किए गए पापों के प्रति दुखित, शोकित तथा पश्चाताप करने लगता है। जैसे ही वह यीशु मसीह द्वारा परमेश्वर के बढ़े प्रेम की

Copyright ANGP

प्रगट होते देखता है, तो उसका हृदय पिघल जाता है, विशेषकर जब वह यह मालूम करने लगता है कि परमेश्वर का पुत्र, यीशु ख्रीष्ट उसके इतने बड़े पापों को उठाने के लिए आया और क्रूस पर मारा गया, यहां तक कि वह श्रापित किया गया।

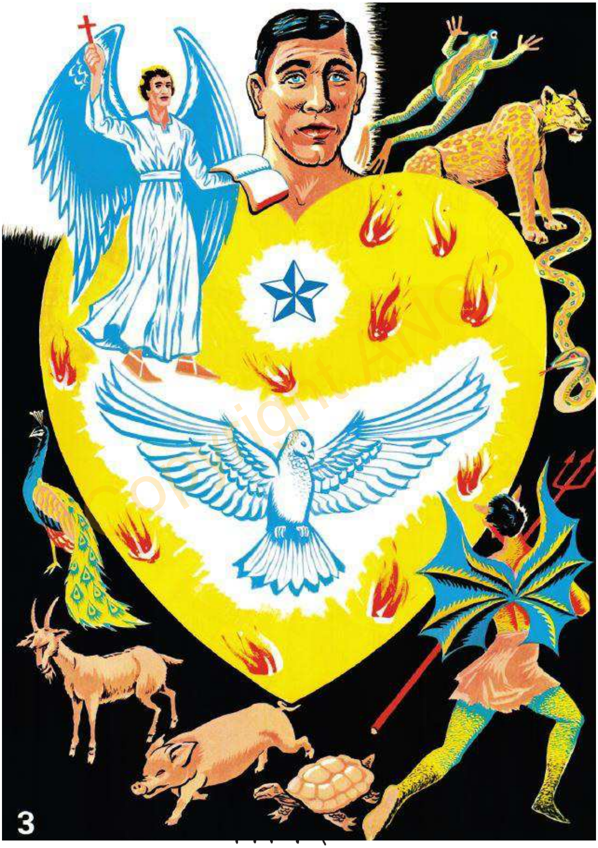

यह सत्य घटना है कि यीशु को कोड़े मारे गए, कांटों का ताज उसे पहिनाया गया, उसके हाथों और पैरों में निर्दयता से कीले ठोंके गए और हमारे ही पापों के बदले में वह क्रूस पर मारा गया। यह सभी घटनाएं स्पष्ट और गहराई के साथ उस पश्चातापी मनुष्य के हृदय में प्रभाव

डालती हैं कि उसका हृदय एवं जीवन ही बदल जाता है, जैसे-जैसे वह परमेश्वर के वचन को पढ़ता जाता है, तो वह अपने को वैसे ही देखता जाता है जैसे दर्पण में देखता और मालूम करता है कि वह परमेश्वर से कितनी दूर हो गया है और उसकी आज्ञाओं के विरुद्ध अपराधी बन गया है। अब उसे गम्भीर और धार्मिक पछतावा होता है और जब वह अपने हृदय को परमेश्वर के सामने आंसू और विलाप के साथ उंडेल देता है, तो यीशु भी उसके निकट आता है। जब वह यह मालुम करने लगता है कि "परमेश्वर के पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है" (१ यूहन्ना १:७) तो परमेश्वर का प्रेम और शान्ति उसके हृदय में प्रवेश करती है। वह यह प्रतीत करने लगता है कि "यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है" (भजन ३४:१८)। परमेश्वर का वचन आगे कहता है कि मैं उसी की ओर दृष्टि करूंगा जो दीन और खेदित मन का हो, और मेरा वचन सुन कर थरथराता हो" (यशायाह ६६:२)। पवित्रात्मा यीशु के मधुर वाणी उसे सुनाता है कि "हे पुत्र (पुत्री) ढाढ़स बांध, तेरे पाप क्षमा हुए"। जब की वह अभी तक मसीह के क्रूस की ओर टकटकी लगाए देख रहा है, जहां यीशु उसके पापों के बदले में मारा गया, तो वह यह मालूम करने लगता है कि अब उसके पापों का बोझ उठा लिया गया है, क्योंकि यीशु ने हमारे दुःख, शोक और रंज को सहन किया और अपने ऊपर उठा लिया, क्योंकि "वही (यीशु) हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया" (यशायाह ५३)।

अब उसके शुद्ध हृदय में पवित्रात्मा और परमेश्वर के प्रेम का पूर्ण अधिकार है। जब वह विश्वास से यीशु और उसके क्रूस की ओर देखने लगता हैं, तो वह यह प्रतीत करने लगता है कि उसके सारे पाप क्षमा हुए और अपने हृदय में निश्चय पाता है कि "परमेश्वर के पुत्र यीशु के लोहू ने उसे सारे पापों से शुद्ध किया। अब उसे निश्चय है कि जो यीशु में विश्वास करता है वह नाश न होगा, परन्तु अनन्त जीवन पाता है (यूहन्ना ३:१६) पवित्रात्मा उसकी आत्मा में गवाही देता है कि उसके पापों की क्षमा हो गई हैं और अनुग्रह के द्वारा अब वह परमेश्वर की

Copyright ANGP

सन्तान बन गया है (रोमियों ८:१६)। "हम को उसके अर्थात यीशु के लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है" (इफिसियों १:७)। देह के द्वारा पाप की पूर्ण अभिलाषाओं को पूरा करने की जगह अब परमेश्वर के लिए जीवित रहने और उसकी सेवा करने की गहरी इच्छा तीव्र होती जाती है, "जिसने पहले हम से प्रेम किया" संसार और ससार की वस्तुओं से प्यार रखने के बदले अब वह परमेश्वर और उसकी बातों से प्रेम रखने लगता है।

इस चित्र में पाप दर्शाने वाले सभी जन्तु अब हृदय के बाहर हो गए हैं, यद्यपि शैतान अपने पहले के निवास स्थान को छोड़ने का इच्छुक नहीं है, अतः वह पिछे घूम कर देख रहा है कि किसी प्रकार उसमें प्रवेश पा सके। इसी के कारण यीशु ने सचेत करते हुए कहा है कि हम जागते और प्रार्थना करते रहें और शैतान का सामना करें कि वह हमसे दूर भागे।

चौथा चित्र

यह चित्र उस मसीही का है जो प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के बलिदान द्वारा पूर्ण शान्ति और छुटकारा प्राप्त कर चुका है और अब वह किसी बात की बड़ाई नहीं करता "सिवाय प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिसके द्वारा संसार उसकी दृष्टि में और वह संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया है" (गलतियों ६:१४)। यीशु क्रूस पर इसी लिए मारा गया जिससे हम भी "पापों के लिए मर कर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं" (१ पतरस २:२४)। एक मसीही संसार की इच्छा के विरुध क्रूस पर चढ़ाया गया है। हमें आज्ञा दी गई है कि "आत्मा के अनुसार चलें और शरीर की लालसा को किसी रीति से भी पूरा न कर" (गलतियों ५:१६,२५)।

वह खम्भा भी जिस पर प्रभु यीशु को उसके कपड़े उतारे जाने के बाद बांधा गया था, इस चित्र में दिखलाया गया है। साथ में वह कोड़ा भी दिखलाया गया है जिससे वह निर्दयता के साथ मारा गया था। वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, और हमारे अधर्म के

कामों के हेतु कुचला गया. हमारी ही शान्ति के हेतु उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जायें" (यशायाह ५३:५) । हेरोदेश

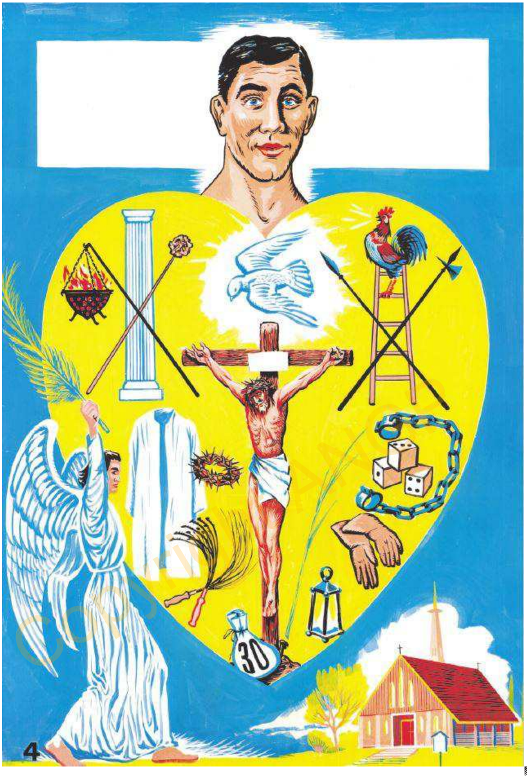

चित्र नं ४ – मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया हुआ व्यक्ति

और उसके लोगों ने यीशु का ठट्टा उड़ाया, और सोने का मुकुट पहिनाने के बदले, उसे कोड़े मार कर उसके सिर पर काँटों का ताज रख कर उसे दबाया। इसके बदले कि यीशु के हाथ में बादशाह का राजदण्ड दें, उन्होंने उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा रख दिया, और उसका ठट्ठा करते हुए कहा "हे यहूदियों के राजा, तेरी जय हो" और उसी सरकण्डे से उसके सिर पर पीटा। इस प्रकार बड़ी निर्लज्जता और निर्दयता से ठट्ठा करने के बाद उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले गए।

आज बहुत से नाम के मसीह हैं जो गिरजाघरों में अराधना करते

हैं, प्रभु भोज का विधि में भाग लेते हैं, परमेश्वर की स्तुति के गीत गाते तो हैं, परन्तु वे अपने बुरे कामों के कारण निरन्तर अपने उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु को दुखित करते और क्रूस पर दोबारा चढ़ाते हैं। "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहते हैं, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (मत्ती ७:२१-२७)।

इस चित्र में हम धन की एक थैली भी पाते हैं जो यहुदा इस्कारियोती का है, जिसने अपने प्रभु यीशु को ३० चान्दी के टुकड़ों में बेच डाला, क्योंकि रुपए के लोभ ने उसके हृदय और मन की आँखों को अन्धा कर रखा था। लालटैन और जंजीर उन सिपाहियों द्वारा उपयोग किया गया जिन्होंने यीशु को रात के समय गिरफ्तार किया था। उन्होंने साथ में चिट्ठी डाल कर यीशु के कपड़े भी बॉट दिए थे और परमेश्वर के वचन की उस भविष्यद्वाणी को पूरा किया कि "वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं" (भजन संहिता २२:१८) उन्होंने यीशु से सब कुछ छीन लिया और उसका इन्कार करते हुए कहा "हम नहीं चाहते हैं कि यह मनुष्य हम पर राज्य करे"।

सभी जगह मनुष्य जाति परमेश्वर की आशीषों को पाने के वास्ते बड़े इच्छुक हैं। सभी वर्षा और सूर्य की रोशनी एवं हवा को सामान्य रूप से पाते हैं, परन्तु वे अपने आपको जीवते परमेश्वर के शासन के आधीन रखना नहीं चाहते हैं। बहुतों के लिए परमेश्वर इसलिए अच्छा है क्योंकि वह संकट और दुःखों में सहायक है।

भाले के द्वारा सिपाहियों ने यीशु के पंजर और हृदय को बेधा "और उसमें से तुरन्त लोहू और पानी निकला" (यूहन्ना १९:३३-३७)। मुर्ग के बांग देने से पहिले पतरस ने यीशु का तीन बार इन्कार किया, परन्तु बाद में फूट-फूट कर रोकर उसने पश्चाताप किया। क्या आप अपनी गवाही और कार्यो के द्वारा यीशु को मान लेते हैं? या मनुष्यों के सामने यीशु का इकरार करने से शर्माते हैं। यीशु ने कहा "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।" (मत्ती १०:३२,३३)

Copyright ANGP

यीशु ने यह भी कहा कि "जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं" (मती १०-३८)। धन्य हैं वे जो उस चट्टान पर जो यीशु मसीह है, उसमें स्थिर खड़े रहते हैं!

पाँचवा चित्र

यह उस पापी मनुष्य के धोये और पवित्र किये हृदय की तस्वीर है जब वह परमेश्वर के अनुग्रह और दया के बहुतायत से बचाया गया हैं। यह हृदय अब परमेश्वर का सच्चा मन्दिर और त्रिएक परमेश्वर अर्थात परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्रात्मा का निवासस्थान बन गया है, जैसा कि यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि "यदि कोई मुझसे प्रेम रखे, तो वह मेरे

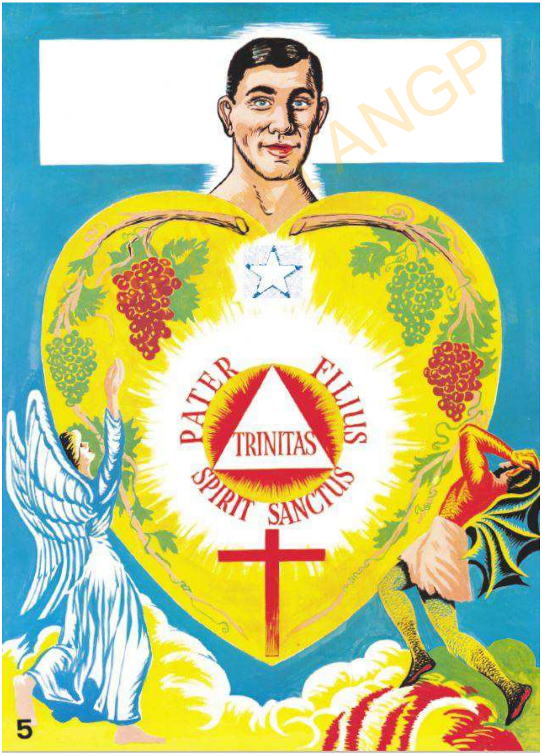

चित्र नं० ५ परमेश्वर का मन्दिर

वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आयेंगे, और उसके साथ बास करेंगे" (यूहन्ना १४:२३)। परमेश्वर यीशू मसीह के द्वारा दीन मनुष्यों का आदर करता, आशीष देता और उन्हें ऊपर उठाता है" (लूका १:५२)।

अब यह हृदय परमेश्वर का सच्चा मन्दिर बन गया है। पाप उसके हृदय से दूर किया गया है शैतान जो झूठ का पिता है, उसके द्वारा प्रभावित विभिन्न जानवरों के बदले अब हम पवित्रात्मा और सत्य की आत्मा को उसके हृदय में वास करते और राज्य करते हुए देखते हैं।
पाप का घृणित निवासस्थान होने के बदले अब उसका हृदय सुन्दर फलदायी बगीचा के समान बन गया है, जिस में आत्मा के फल अर्थात प्रेम आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, संयम तथा दीनता के फल लगते हैं जो परमेश्वर और मनुष्य को भाते हैं।अब वह सच्ची दाखलता जो यीशु मसीह है' उसका फलदायक डाली बन जाता है। उसमें आत्मा के फल उत्पन्न होने का भेद इसी में है कि वह मसीह में और मसीह और उसका बचन उसमें बना रहता है (यूहन्ना १५:१-१०)। अब जब कि वह पवित्रात्मा से भर गया है और उसका बपतिस्मा पाया है, तो आत्मिक प्राप्त होती है कि वह शरीर ओर उसकी अभिलाषों से भरी वासनाओं पर जय पाने और पुराने मनुष्यत्व को क्रूस पर चढ़ाता है।
पवित्रात्मा की सामर्थ से वह आत्मा के अनुसार चल कर शरीर की अभिलाओं पर जयवन्त होता है। अब वह देखने, सुनने और सोचने के अनुसार नहीं बरन विश्वास से जोवित रहता है, क्योंकि यीशु मसीह पर विश्वास करना ही संसार पर जय पाना है। उसकी यह जोवित आशा है कि वह अपने प्रभु यीशु को महिमा में फिर देखेगा, और इस प्रकार परमेश्वर के प्रेम में बना रहता है, जो सदा काल तक रहता है।

"धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे" (मत्ती ५:८)। दाऊद राजा, अपनी सारी धन-सम्पति तथा बाहरी शत्रुओं के ऊपर विजयी होते हुए इस बात को भली-भाँति जानना था कि सबसे भारी युद्ध इसके स्वयं के हृदय में लड़ा जा रहा है। अतः वह अपनी आन्तरिक आवश्यकता को मालूम करते हुए यह प्राथना करता है। कि "हे परमेश्वर मेरे अन्दर, शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा

Copyright ANGP

नये सिरे से उत्पन्न कर" (भजन संहिता ५१:१०)। कोई इस योग्य नहीं है कि अपने हृदय को शुद्ध कर सके, और न अपने मन में शुद्ध मन उत्पन्न कर सकता है, सिवाय इसके कि वह पश्चातापी हृदय से परमेश्वर की ओर फिरे, जसा की दाऊद ने किया और परमेश्वर से प्रार्थना करे उसके अन्दर शुद्ध मन और नया हृदय उत्पन्न करे। परमेश्वर आपके जीवन में नया काम करने का इच्छुक है। परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य की धार्मिकता मैले-चिथड़े कपड़े के समान है और वह हमारे हृदय में परमेश्वर का निवासस्थान नहीं बना सकता है।

परमेश्वर आप की सहायता करने को तैयार है क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की है कि" मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूंगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूंगा। मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नयी आत्मा उत्पन्न करूंगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को मास का हृदय दूंगा। और मैं अपनी आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मान कर उसके अनुसार करोगे" (यहेजकेल३६:२५.२७)। यही नया नियम है जिस पर परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के लोहू से छाप लगा रखी है।

इस चित्र में हम देखते हैं कि एक स्वर्गदूत फिर प्रगट हो रहा है। स्वर्गदूत को उन लोगों की सेवा के वास्ते नियुक्त किया गया है जो अन्नत जीवन पाने के वारिश होंगे, क्यों कि" यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाए रहता है" (भजन संहिता ३४:७; ९१:११; दानिएल ६:२२; मत्ती २:१३; प्रेरित ५:१९; १२:७-१०)।

इस चित्र में शैतान भी खड़ा हुआ दिखाया गया है, जो मनुष्य के हृदय के निकट खड़ा होकर मौका ढूढ़ रहा कि फिर अपने पुराने स्थान में जा बसे : इसी लिए हमें आज्ञा दी गई है कि जागते रहें और प्रार्थना करते रहें क्योंकि हमारा विरोधी शैतान गरजने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए" (१ पतरस ५:८) बहुधा शैतान उजियाले के दूत का रूप धारण कर पवित्र लोगों और भक्तों को जो जागने प्रार्थना करने में जो सुस्ताये गये हैं, उन्हें संसार की बुरी वासनाओं और शारीरिक अभिलाषों के द्वारा बहकाता और गिनता फिरता है और अपनी

धूर्त चाल के द्वारा चुने हुओं को भी धोखा देने का यत्न करता रहता है। अतः यदि हम शैतान का सामना करें तो वह दूर भागेगा" (याकूब ४;७)।

छठवां चित्र

यह चित्र पीछे फिसलने वाले व्यक्ति की दुखित तस्वीर है। उसकी आंख बन्द होने लगी है जो हो यह प्रगट करती है अब वह ठन्डा होना शुरू हो गया है और अपने मसीही जीवन में निश्चित हो कर सो रहा है जब कि उसकी दूसरी आँख निर्लज्जता से चारों ओर देख रही है कि संसार से प्रेम बासना करे। उसकी भीतरी ज्योति अब धीमी पड़ गई है. और उसको हृदय का चिन्ह जिससे वह मसीह के लिए दुःखों को सहने को तैयार रहता था, अब धींमी पड़ गई है और धर्मी नहीं रह गई है। वह चारों ओर परीक्षाओं से घिरा हुआ है, और उनका सामना करने के बदले उसमें गिरता और फंसता जा रहा है।

परमेश्वर की मधुर वाणी सुनने के बदले, अब वह शैतान और उसकी घूर्तता से भरी झूठी प्रतिज्ञा की ओर ध्यान देने लगा है। यद्यपि वह अब भी इतवार की आराधना करने गिरजाघर में जाता है और धर्म की आड़ में अपनी संसारिक अभिलाषों को छिपाए रहता है, परन्तु परमेश्वर का प्रेम उस के हृदय में ठन्डा पड़ गया है। वह दो बिचारों के बीच में फस कर दो-चित्ता हो गया है। वह परमेश्वर से प्रेम रखने का ढोंग रचता तो है, परन्तु अधिकतर संसार की ओर खीचता जाता है उसके हृदय का तारा अर्थात विवेक धीमा पड़ता जा रहा है। अब वह क्रूस को मुस्कराहट के साथ नहीं उठाले जाता क्योंकि अब वह एक भारी बोझ सा हो गया है। उसका विश्वास डगमगाने लगा है और प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर से संगति और बातचीत बन्द हो गयी हैं। वह अपने हृदय की दशा के प्रति लापरवाह हो गया है और अपने हृदय में शैतान के वास्ते जगह बना रहा है। अब अपने सच्चे विश्वासियों की संगति से अधिक संसारिक संगति का आनन्द उठाने लगा है।

मोर की आत्मा, जो घमन्ड का प्रतीक, अब उसके हृदय में प्रवेश ढ़ढ़ने लगती है। वह इस बात को भूल जाता है कि वह अनुग्रह से बचाया गया था और अब वह घमण्डी मसीही बन गया है। शराबी उसके हृदय

के दरवाजे पर खटखटाते और प्रवेश करना चाहते है। शैतान उसे बतलाता है कि विशेष अवसर में संसारिक मित्रों से संगति रखने में उसकी आत्मिक जीवन में कोई बिगाड़ नहीं आ सकेगा। शारीरिक विचार और वाशनाएं उसको अब मालूम होने लगती हैं। अब वह बुरे से युक्त मजाकों बुरे चित्रों, अनैतिक संगतियों, नाच-रंगों' प्रश्न युक्त मनोरंजनों इत्यादि का चाहक बन गया है और शैतान के बुरे सुझाबों को मानों निगल जाने लगा

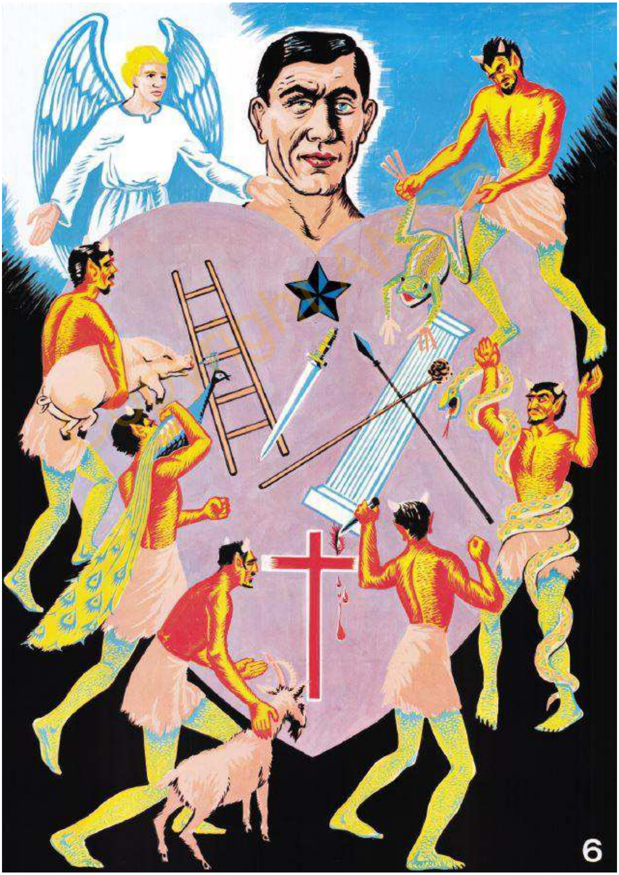

चित्र ६ परीक्षित और बिभाजित हृदय

है जो यह कहने लगे हैं कि यह तो बिल्कुल स्वाभाविक ही है कि यदि एक पाप किया तो वह पाप नहीं है।

यह सच है कि शैनानिक चिड़ियों को अपने सिरों पर से उड़ते हुए नहीं रोक सकते हैं, परन्तु हम इस बात में दोषी ठहराए जायेगें यदि हम उनको अपने ऊपर बैठने और अपने हृदयों में बसा कर उन्हें बुरे काम करने दें। यदि हम शैतान को एक उंगली भी दें तो वह हमारे सारे हाथ को पकड़ लेगा और हमारे प्राण आत्मा को अनन्त काल में ले जावेगा। इसलिये हम परमेश्वर की इस गम्भीर चितावनी की ओर ध्यान दें कि हम जवानी की अभिलाषाओं से दूर भागें और पाप से न खेलें, चाहे वह किसी भी रूप में प्रगट्र हो। यीशु मसीह के पास आएं क्यों कि उसी में हमारी विजय औरछुटकारा है और वही छुड़ाने वाला और जिताने वाला है।

इस चित्र में यह भी दिखाया गया हैकि एक मनुष्य हृदय में छुरा मार रहा है, जो मसींही धर्म के विरोधियों और ठट्ठा उड़ाने वालों को बतलाता है। ऐसा वे अपने कपटी जीभ और ठट्ठा करने वाले होंट से करते हैं और मसीहियों के दिल को घायल करते हैं और उन्हें विभाजित करते हैं ताकि फूट पड़े अलगाव हो और नाश हो जावें। वह परमेश्वर से डरने के बजाय मनुष्यों से डरने लगता है कि मनुष्य उसके लिए क्या कहेगा या करेगा, अतः मनुष्यों का गुलाम बन जाता है और परमेश्वर से दूर हो जाता है संकट निराशता के समय क्रोध और बुरे विचार आने लगते और हृदय में प्रवेश पाने लगते हैं जलन रखने वाला वह काला सांप उस समय प्रवेश करता है जब वह दूसरों को खुशहाल और सफल होता हुआ देखता है यहाँ चित्र में मनुष्य के हृदय में प्रवेश पाने का प्रयत्न कर रहा है ताकि घृणा और घमन्ड को उत्पन्न करे।

पैसे के लोभ का हृदय में घुस आना वहुत ही सहज है इसी लिए प्रभु यीशु ने चितावनी देते हुए कहा" जागते और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो', (मत्ती २६:४१)।" इस लिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूँ वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े "(१ कुरि - १०:१२)"। हमें परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लेना है कि शैतान की युक्तियों के सामने खड़े हो सकें (इफिसियों ६:११-१८)।

Copyright ANGP

—: सातवां चित्र :—

यह चित्र मनुष्य के पीछे फिसली हुई दशा को बतलाता है। जिसमें कि वह एक समय परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के द्वारा मुक्ति के विषय में समझदार था स्वर्गीय बरदानों का स्वाद चख चुका था और पबित्रात्मा की संगति में सहभागी था, परन्तु अब पतित हो गया है। यह उस मनुष्य के हृदय की भी दशा को बताता है, जिसने सुसमाचार की सत्यता, जिसे "अच्छा सन्देश" कहते हैं, उसे सुना, परन्तु अपने पापों से

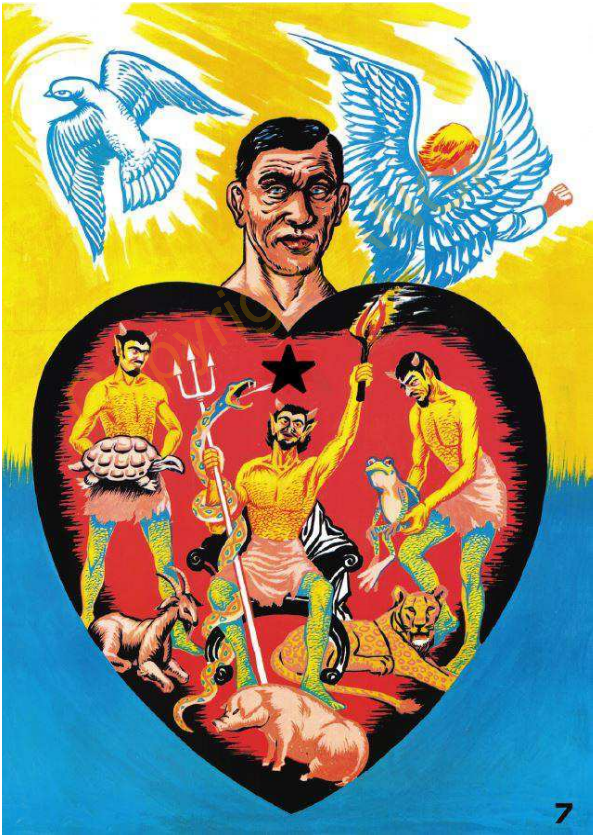

चित्र नं० ७ फिसला हुआ और कड़ा बना हुआ हृदय

कभी पश्चाप नहीं किया और न दीन होकर अपने को परमेश्वर के सामने अर्पण किया। एक कनुष्य जब परमेश्वर उससे निवेदन करता है उस समय यदि अपने दिल को कठोर बना लेता है तो और भी बुरा बना जाता है और चाहे उसके सुधार के लिए कितना ही परिश्रम किया जावे वह सुधार नहीं सकता है।

पीछे फिसलने वाले की दशा का वर्णन करते हुए यीशू आप ही कहता है कि " जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है तो सूखी जगहों में विश्राम ढ़ढ़ती फिरती है: औरजब नहीं पाती तो कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी लौट आऊंगी। और आकर इसे झाड़ा-बुहारा सजा सजाया पाती है। तब वह जाकर अपने से बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले अती है और वे उसमें बैठकर वास करती है, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है" (लूका ११:२४-२६)।

"उन पर यह कहावत ठीक बैठती है, कि कुत्ता अपनी छांट की ओर और धोई हुई सुअरनी कीचड़ में लोटेने के लिए फिर चली जाती है "(२ पतरस २:२२)

बाइबल धर्मशास्त्र की ये आयतें पीछे फिसले हुए या अपश्चातापी पापी मनुष्य के हृदय की दशा को स्पष्टता से समझाती है। यहाँ पाप अपनी सारी धोखेबाजी के साथ हृदय में रहने और राज्य करने को आ गया है। यहाँ तक कि उसका चहरा भी उसके हृदय की दशा को प्रगट करता है। पवित्रात्मा और उस नम्र कबूतर को भी लाचार हो कर उस हृदय को छोड़ना पड़ा क्यों कि पाप और पवित्रात्मा एक साथ नहीं रह सकते हैं यह असम्भव है कि हृदय परमेश्वर का मन्दिर बना रहे और साथ में शैतान की खोह भी बनी रहे। स्वर्गदूत अर्थात परमेश्वर का वचन को भी उदास पूर्ण हो कर उसके हृदय को छोड़ना पड़ा तो भी आशा के साथ वह पीछे देखता है कि अब भी वह पश्चाताप करे, जैसा उड़ाऊ पुत्र ने किया " में अब उठ कर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूँगा कि पिता जीं, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नही कि तेरा पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की नाई रख ले " (लूका १५:१८)। इस पिता ने अपने पुत्र को पश्चातापी देख कर उसे क्षमा किया और अपने घर में फिर बहाल किया।

Copyright ANGP

इस चित्र को देखने से मालूम पड़ता है कि उसके हृदय में कोई सच्चा पछतावा नहीं है, न परमेश्वर की ओर फिरने की इच्छा है। और न ही यीशु के चरणों के पास जा कर क्षमा ढूंढने की इच्छा है। उसका विवेक मानों ऐसा है कि गरम लोहे से दागा गया हो और चुप कर दिया गया हो उसके पास कान तो है परन्तु वह यीशु के विनम्र और मधुर वाणी को सुन नही सकता है उसके पास आँखें तो हैं परन्तु वह उस नरक के अथाह कुन्ड को देख नहीं सकता जो उसके पैरों के पास मुंह फाड़े हुए हैं। उसको अब अपने पापों में बने रहने में कोई लज्जा नहीं आती है' क्यों कि शैतान अब उसके हृदय में राज्य करने आ गया हैं और उसके हृदय में सिंहासन में राजा की नाई बैठा है। यह सम्भव है कि वह अब भी बाहरी तौर से भला और आदरणीय लगता हो और धार्मिक एंव भक्ति का दिखावा रखता हो परन्तु वह चूना फेरी हुई कबर के समान है, जो ऊपर से तो सुन्दर दिखायी पड़ती है परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी है " (मत्ती २३:२७)।

इस प्रकार झूठों का पिता, शैतान ने सत्य की आत्मा अर्थात यीशु मसीह की जगह पर कब्जा कर रखा है। हर एक जानवर पाप को प्रगट करता है जो अब विशेष दुष्टात्मा के साथ उसके हृदय में समाया हुआ हैं। यद्यपि वह अपने आप को इन बुरे सताने वाली दुष्टात्मा से स्वतन्त्र करना चाहता है परन्तु अब उन्होंने उसे ऐस बॉध रखा है कि छुटकारा पाना कठिन है। " जबकी मूसा की व्यवस्था का न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड योग्य ठहरेंगे, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया है " (इब्रानियों १०:२८, २९,२ पतरस १:१४)।

प्रिय मित्र, यदि तस्वीर आप के हृदय से मिलती है, तो बिना देरी किये आप परमेश्वर को पुकारिए और अपने हृदय की गहरायी से उसकी दोहाई दीजिये। " वह (यीशु) उनका पूरा उद्धार कर सकता है क्यों कि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है "। क्यो कि परमेश्वर योग्य और इच्छुक है कि जो सच्चे पश्चातापी की आत्मा से उसके पास

Copyright ANGP

आते हैं, उनके पापों को क्षमा करे और बहाल करे। वह शैतान और उसके अन्धकार की सारी सेना को बाँध सकता है और उनको आप के हृदय से बाहर निकाल सकता है, यदि आप इच्छुक हैं कि वह आप के लिए यह कार्य करे और अपने दिल में उसे आने दें। उस कोढ़ी मनुष्य के समान आइये जिसने यीशु से कहा', हे प्रभु यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है। यीशु ने उत्तर दिया, मैं चाहता हूँ तू शुद्ध हो जा और तुरन्त उसका कोढ़ जाता रहा और वह शुद्ध हो गया" (मरकुस १:४०-४१,४२)। परन्तु यदि आप अपने दिल को कठोर करेंगे, और ज्योति के बदले अन्धकार से प्रेम रखेंगे तो आप के लिए बचने की कोई आशा नहीं है. न कोई सहायता मिलेगी, क्यों कि जीवन के स्थान पर आप ने मृत्यु को चुना है। क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है „ (रोमियों ६:२३)।

आठवाँ चित्र

इस चित्र में हम उस टालमटोल करने वाले और कठोर पापी को मृत्यु के पास पहुँचते हुए देख रहे हैं, उसका सारा शरीरपीड़ा से और आत्मा मृत्यु के डर से भर गया है।मृत्यु जो हड्डी के ढांचे का रुप है, अचानक और अनिच्छुक समय पर आ पहुँची है। पाप से खेलने का थोड़े समय का सुख एक धोखा और अब वह भी जाता रहा। पाप की वास्तविक दशा अपनी मजदूरी के रूप में प्रगट हो गई है जिसका वह अब सामना करता है नरक की पीड़ाएं अपने शिकार के ऊपर पजा जमाने लगीं हैं वह प्रार्थना तो करना चासता है, परन्तु परमेवर के साथ बार्तालाप नहीं कर पाता है, क्यों कि काफी समय तक उसने परमेश्वर के प्रेम को ठुकरा दिया। उसके मित्र अब उसके बिस्तर के पास खड़े होने से डरते हैं, और उनके शुन्य शन्ति के बचन से वह सन्तुष्ट नहीं होता। दुराचार और अन्याय से कमाया हुआ धन न तो उसके जीवन को बढ़ा रहा है और न हीं उसकी आत्मा और प्राण को बचा सकता है। वह बड़ी सकेती और पीड़ा में पड़ा है। शैतान उसे परमेश्वर की बातों की ओर ध्यान लगाने से रोकता है।

अब हर चीज जिस से उसने प्यार किया और जिस के लिए वह जीया अब उसका ठट्ठा उड़ाते हुए से प्रतीत होने लगी है। यहाँ तक कि उसके अबिश्वास योग्य और शायद मन न फिराबे हुए पादरी (अध्यक्ष) भी अस-

Copyright ANGP

हाय हैं, क्योंकि उसने परमेश्वर के अनुग्रह को ठुकरा दिया और परमेश्वर की आज्ञा के द्वारा दोषी ठहराया जा चुका है। उसे अब मालूम होने लगा है कि जीवते" परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है" (इब्रानियों १०:३१)। उसे आशा थी कि एक दिन किसी उपयुक्त समय में मृत्य शैय्या पर, परमेश्वर से वह अपना सम्बन्ध ठीक करके मेल-मिलाप कर लेगा, परन्तु अब उसे मालूम होता है कि बहुत देरी हो गई है और कुछ बन नहीं सकता है। हजारों मनुष्य अचानक मर जाते हैं और उनको मृत्यु हर चीज जिससे उसने प्यार किया और जिसके लिये वह जीया, शैय्या पर मौका ही नहीं मिल पाता है कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ सकें और मेल करें। इस लिये यह जरूरी है कि हम परमेश्वर को इसी समय ढूंढे

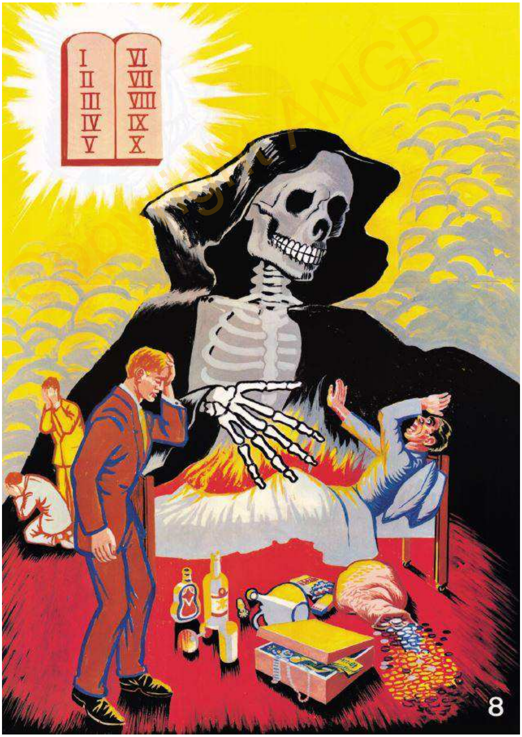

चित्र नं ८ पापी का दंड

जब कि वह मिल सकता है। परमेश्वर के शान्ति पूर्ण और बचाने वाले शब्दों को सुनने के बदले वह मरता हुआ पापी मनुष्य अब अपने न्यायकर्त्ता के शब्दों को सुनता है कि, हे श्रापित लोगो मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है" (मत्ती २५:४१) । क्यों कि " मनुष्यों के लिए एक बार मरनां और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है" (इब्रानियों ९:२७) ।

नवाँ चित्र

यह चित्र एक ऐसे मसीही की दशा को बताती है जो कठिन जांचों और परीक्षाओं में से जीतते और प्रज्वलित होते हुए निकला है। जब कि चारों ओर वह परीक्षाओं से घिरा था, वह हरदशा में स्थिर बना रहा और अन्त तक सहता रहा और यीशु मसीह के द्वारा जयवन्त से भी बढ़ कर निकला। वह केवल मसीहीं दौड़ में प्रवेश ही नहीं होता है परन्तु उस में भिड़ा रह कर धीरज से दौड़ता है। वह न दाहिने देखता है और न बायें परन्तु " विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकता रहता है (इब्रानियों १२:२) ।

शैतान अपनी सारी अन्धकार की सेना के साथ मसीह के विश्वासियों को चारों ओर घेरे रहने का व्यर्थ ही प्रयत्न करता है कि उन्हें अपनी ओर बहका कर गिरा दें। घमण्ड, रूपयों (धन) का लोभ, अनैतिक व्यभिचारकी दुष्टात्मा और इसी प्रकार के कई और पाप भी यहां दिखाए गए हैं चीता के स्थान पर अब हम एक गधा को देखते हैं, क्यों कि पाप बहुधा हमारे पास भिन्न-भिन्न रूपों और नामों के साथ आता है। परन्तु सचेत, जागृत और सर्तक मसीही पाप को पहिचान कर समझ सकता है पाप कभी धर्म की आड़ में धर्म के नाम से आता है तो कभी ज्योति के स्वर्गदूत की आड़ में प्रगट होता है जिसे प्रार्थना करने वाला सर्तक मसीही पहिचान सकता है,क्योंकि परमेश्वर का बचन और उसकी सत्य आत्मा सच्चाई के मार्ग में उसकी अगुवाई करता है। चित्र में एक मनुष्य अपने हाथ में शराब की बोतल और गिलास लिए,इस मसीही के चारों ओर नाच रहा है और संसार की वासनाओं और थोड़े समय के सुख की परीक्षा में उसे फंसा कर गिराने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु परमेश्वर को अर्पित किये गये मसीही के ऊपर उसका कोई असर नही पड़ता क्यों कि उसने अपने आप को यीशु ख्रीष्ट के

के साथ पाप और संसार की बुराइयों के प्रति क्रूस पर चढ़ाया है।

इस चित्र में दूसरा मनुष्य एक मसीही को अपनी कटार से बेध रहा है। बुराई करना और बोलना, चुगली, करना और निन्दा और ठट्ठा करना और ख्रुष्टि बिरोधी शत्रुओं के द्वारा डर-भय की धमकी देना और नाम के मसीहियों द्वारा डराना-धमकाना सच्चे विश्वासी मसीही के हृदय में लगा तार कटार बेधने के बराबर है। परन्तु वह लोगों के कहने की बातों की परवाह न कर उसके लिए मृतक सा प्रतीत होता है। परमेश्वर क्या कहता है और क्या चाहता है। इसके प्रति वह सदैव जागृत रहता है। यीशु ने कहा " धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और

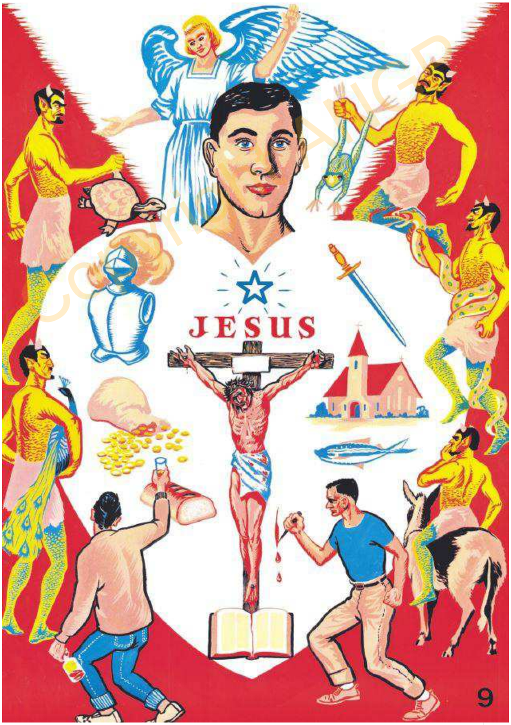

चित्र नं० जीतने वाला हृदय

सताएं और झूठ बोल कर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है" (मत्ती ५:११,१२)।

पाप शरीर की अभिलाषा (स्वार्थ) तथा शैतान निरन्तर इस बात का यत्न कर रहे हैं कि उस मसीही को परमेश्वर के प्रेम से दूर करें। परन्तु बड़े आनन्द और पूरे भरोसे के साथ वह सचमुच में कह सकता है कि" मुझे परमेश्वर के प्रेम से कौन अलग कर सकता है ? क्या क्लेश या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया, जयवन्त से भी बढ़ कर हैं," (रोमियों ८:३५,३७) ।

परमेश्वर के सारे हथियार को पहिनने के पश्चात वह दुष्ट का और बुरे दिन का सामाना करने को तैयार है, और यीशु मसीह के द्वारा सब परीक्षाओं पर जयवन्त होता है, क्योंकि मसीह यीशु भी सभी परीक्षाओं पर जयवन्त हुआ और उसकी शक्ति की सामर्थ में हम विश्वासी भी विजयी बन सकते हैं ताकि महिमा का मुकुट पाए ।

तारा जो उसका विवेक है वह साफ, निर्मल और चमकता है। उसका हृदय विश्वास से और पवित्रात्मा से भरा है। स्वर्गदूत जो परमेश्वर का वचन है, उसको उन बहुमूल्य प्रतिज्ञाओं की याद दिलाता है जो उनको दिए जाते हैं जो जयवन्त होते हैं और अन्त तक धीरज धरे रहते हैं। " जो जय पाए मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्ग लोक में है फल खाने को दूंगा"।

" जो जय पाए , उसको दूसरी मृत्यु से हानि न पहुंचेगी "।

जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दूंगा, और उसको एक श्वेत पत्थर भी दूंगा; ओर उस पत्थर पर एक नाम भी लिखा हुआ होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय और कोई न जानेगा"। आत्मा फिर कहती है कि " जो जय पाए और मेरे कामों के अनुसार अन्त तक करता रहे, मैं उसे जाति-जाति के लोगों पर अधिकार दूंगा "। " जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा पर उसका नाम अपने पिता और

Copyright ANCP

स्वर्गदूतों के साम्हने मान लूंगा "। " जो जय पाए, उसे मैं अपने परमेश्वर के मन्दिर में एक खंम्बा बनाऊंगा; और वह फिर कभी बाहर न निकलेगा। जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया (प्रकाशित-वाक्य २:७,११, १७,२६;३;५, १२,२१)।

पैसों की खुली थैली इस बात को प्रगट करती है कि न सिर्फ उसका हृदय, परन्तु उसका पैसा भी परमेश्वर को अर्पण किया गया है। अपनी सम्पति को अपने स्वार्थ में व्यय करने के बदले, वह गरीबों की सहायता करता है, अपना दशमांश देता है, अपनी भेंट, यहाँ तक कि अपना सब कुछ परमेश्वर को दे देताहै और उसकी महिमा के लिए उपयोग में लाता है।

रोटी और मछली इस बात को प्रगट करती है कि वह एक शुद्ध पवित्र और संयमी जीवन जीता है। वह नशीलेपेय, या लोहू को खाने से या गला घोंटे हुए मॉस को खाने से या अन्य किसी प्रकार के अशुद्ध भोजन से अपने आप को अपवित्र नहीं करता है। वह अपने धन-सम्पति को बरबाद नहीं करता है और न अपने शरीर बुरी आदतों में पड़ कर या नशीली वस्तुओं का सेवन करके बिगाड़ता है क्यों कि वह जानता है कि उसका बदन जीवते परमेश्वर का मन्दिर है। वह न पान-तम्बाकू खाता व पीता है न नशीली दबाइयों का सेवन करता और न दाखरस से मतवाला होता है परन्तु वह सन्तुलित शुद्ध तथा स्वास्थ्य बर्धक भोजन करता है। उसका हृदय परमेश्वर से प्रार्थना करने का स्थान बन गया। वह अराधना के लिए निरन्तर गिरजाघर में इतवार को जाता है। वह प्रार्थना सभा में जाना पसन्द करता है और स्वयं भी अपने एकान्त प्रार्थना में परमेश्वर से संगति रखता है। उसका स्वयं का हृदय प्रार्थना का घर बन गया है

खुली हुई पुस्तक इस बात को प्रगट करती है। कि बाइबल धर्मशास्त्र उसके वास्ते एक खुली पुस्तक है, जिसे वह रोज पढ़ता, अध्ययन करता और बुद्धि, समझ, सामर्थ, जीवन, ज्योति और अगम्य धन को प्राप्त करता है। बचन अब उसके पांय के लिए दीपक, पथ के लिए उजियाला और एक तलवार सी हो गई है जिसके द्वारा वह शत्रु का सामना करता

Copyright ANGP

ग्रौर विजयी होता है। वह उसके लिये दैनिक आत्मिक भोजन है तथा जीवन का पानी है जो उसकी ग्रात्मिक पियास को बुझाता रहता है ग्रौर वह अपने ग्राप को देखता है।

वह ग्रपने क्रूस को उठाकर मसीह यीशु के पीछे चलने से ग्रब लज्जित नहीं होता है, वरन बड़े प्यार और नम्रता के साथ ग्रपने प्रभु के पद चिन्हों पर चलता है वह जानता है कि बिना क्रूस के या पीड़ा सहे मुकुट प्राप्त नहीं होता। वह जानता है कि मसीह के साथ वह जिलाया गया है कि नया जीवन व्यतीत करे, इस लिये वह स्वर्गीय वस्तुग्रों की खोज में रहता है जो अनन्त काल तक बनी रहती हैं। संसार ग्रौर उसके वस्तुग्रों की तरफ से उसकी रूचि समाप्त सी होती जाती है। वह अपने परमेश्वर से मिलने को तैयार है। वह उस वृक्ष के समान है जो पानी के नजदीक लगाया गया हो और ग्रपने मौसम में फल लाता है। वह मृत्यु से भयभीत नहीं होता, क्यों कि पवित्रात्मा के द्वारा परमेश्वर का सिद्ध प्रेम उसके हृदय को भरपूर किये हुए है।

Copyright ANCP

दसवां-चित्र

प्रभु यीशु ने कहा "पुनरूत्थान ग्रौर जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौ भी जीएगा। ग्रौर जो कोई जीवता है ग्रौर मुझ पर विश्वास करता है, वह ग्रनन्त काल तक न मरेगा
यूहन्ना ११:२५-२६)।

"मैं तुमसे सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुन कर मेरे भेजने वाले की प्रतीत करता है, ग्रनन्त जीवन उसका है, और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु वह मृत्यु के पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है" (यूहन्ना ६:२४)।

मसीहियों को मृत्यु का कोई डर नहीं है क्योंकि परमेश्वर का वचन उसके हृदय में यह गवाही देता है कि "यह नाशमान (शरीर) अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा होजाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु तेरी जय कहां रही? हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है, और

पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है" (१ कुरिन्थियों १५:५४-५७)।

वह व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ जीता और चलता है मृत्यु से कभी डरता नहीं है। जब उसके इस नश्वर संसार से कूच करने का समय आता है तब वह आनन्दपूर्वक जाता है जैसा की पौलुस प्रेरित कहता है" जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूं, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है" (फिलिप्पियों १:२३)।

एक मसीही अपने प्रभु यीशु के चेहरे को देखना चाहता है जो उसके उद्धार के लिये क्रूस पर मारा गया और जी भी उठा। परमेश्वर के वचन से पवित्रात्मा उसे याद दिलाती है कि" तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं - - और मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं - - और फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो "(यूहन्ना १४:१-३)।" जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं" (१ कुरिन्थियों २:९)

डरावनी खोपड़ी अर्थात मृत्यु के बदले, परमेश्वर का एक स्वर्गदूत इस अन्तिम चित्र में दिखाई देता है वह उस धर्मी ठहराये गये आत्मा परमेश्वर के पास ले जाने को ठहरा है। उसका प्राण और उसकी आत्मा अब मरणहार शरीर से निकल कर खुले द्वार से स्वर्ग में अपने प्रभु यीशु से मिलने को ऊपर उड़ती है। वह अपने प्रभु से प्रेम रखता था, उसके लिए जीवित रहा और मरा भी। परमेश्वर की उपस्थिति में उसको आनन्दित स्वागत दिया जायगा जहां उसका प्रभु इन सिफारिश पूर्ण शब्दों से उससे मिलेगा कि " धन्य हे अच्छे और विश्वास योग्य दास, तू थोड़े में विश्वास योग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा, अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो "(मत्ती २५:२१)। आगे को शैतान का उस पर कोई प्रभाव न पड़ेगा। "यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है" (भजन संहिता ११६:१५)।

Copyright ANGP

चित्र नं० १० महिमामय युक्त स्वर्ग को जाना

"और मैंने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि लिख, जो मुर्दे प्रभु में मरते हैं वे अब से धन्य हैं आत्मा कहता है, हाँ क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएं और उन के कार्य्य उन के साथ हो लेते हैं, । (प्रकाशितवाक्य १४:१३) ।

-:अन्तिम उपदेश:-

प्रिय पाठक, रमेश्वर आपकी सहायता करे कि आप अपना हृदय उसको दें, जिसने पसे प्यार किया और कहा है कि "हे मेरे पुत्र

(पुत्री) अपना मन मेरी ओर लगा अर्थात् मुझे दे और तेरी दृष्टि मेरे चाल-लचन पर लगी रहे" (नीतिवचन २३ :२६)। अपने थकित, निराशपूर्ण पीड़ित एवं बोझ से दबे हुए हृदय को योशु मसीह को दे और उसके सामने खोल दे, वह आपको नया हृदय और आत्मा का नया दान देगा। अपने हृदय की धोखे की बात में न आइये और न आप अपने स्वार्थी अभिला-षाओं और इच्छाओं के अनुसार चलें, "क्योंकि जो अपने ऊपर भरोसा रखता है, वह मूर्ख है; पर जो बुद्धि से चलता है, वह बचता है " (नीति-वचन २८:२६) ।अपने पापों को त्याग कर, परमेश्वर की धार्मिकता की खोज कर उसी में बना रह, " क्यों कि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है परन्तु परमेश्वर का बरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोमियो-६:२३) ।

आप, जिसने अपने जीवन को परमेश्वर को सौंप दिया है, " उन सारी खरी बातों को जिसे आप ने मुझ पौलुस से सुनी हैं, उनको इसविश्वास और प्रेम के साथ, जो यीशु मसीह में है, अपना आदंश बना कर रख" (२ तिमुथियुस १:१३)। आगे पौलुस कहता है कि "मैं उसे जिस की मैं ने प्रतीत की है, जानता हूँ; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है " । इस पवित्र विश्वास में अपने आप को स्थिर करते हुए पवित्रात्मा में प्रार्थना करते रहें, अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में बनाये रखें और विश्वास के कर्त्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जो मार्ग, और सत्य और जीवन है; और अपने प्रेमी भक्तों को अपनी महिमा के जलाल में ले जाने को शीघ्र आने वाला है। वह" राजाओ का राजा और प्रभुओं का प्रभु है। "

" अब जो तुम्हें ठोकर खाने मे बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के साम्हने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है, उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्त्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम और अधिकार, हमरे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से हैं, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन ॥ (यहूदा २४,२५)।

Copyright ANGP

A SPECIAL WORD FROM ANGP

UN MONDE SPÉCIAL DE L'ANGP

UMA PALAVRA ESPECIAL DA ANGP

This booklet "The Heart of Man" is available in over 538 languages and dialects spoken throughout the world (Africa, Asia, The Far East, South America, Europe, etc.) Our Heart Book is now also available on cell phones, tablets, etc from www.angp-hb.co.za or as an APP "Heart of Man" on Android phones.

Le livre du "Coeur de l'homme" peut etre obtenu en plus de 538 langues et dialectes parles dans le monde entier, a savoir: Afrique, Amerique, Asie, Extreme Orient, Europe. Notre Livre du Coeur est maintenant aussi disponible sur votre Telephone cellular, plaques, etc. de www.angp-hb.co.za ou comme une Application "Heart of Man" sur telephones Android.

Este livro "O Coracao do Homem" e obtfdo em mais de 538 linguas e dialectos falados em todo o mundo, a saber: (Africa, Asia, America do Sul, Extremo Oriente, Europa, etc). O nosso Livro O Coração do Homem tambem esta agora disponivel em telefone celular, tablets, etc. de www.angp-hb.co.za ou como um aplicativo "Heart of Man" nos telephones celulares Android.

Copyright ANGP

The 10 heart pictures contained in this booklet are also available in the form of large coloured picture charts (86 x 61cm) bound together in a set of 10 pictures. These "Heart Charts" can be obtained with European or African features and are particularly suitable to be used in conjunction with the Heart Book for class-teaching, open air evangelization etc. Kindly contact us to ascertain the latest subsidized price of this chart.

Les 10 images du coeur qui figurent dans ce livre peuvent etre obtenues en tableaux de couleur, format 86 x 61 cm, avec des physionomies europeennes ou africaines. Ils peuvent etre utilises en meme temps que le livre du coeur pour des classes bibliques, a

l'ecole du dimanche ou lors de reunions de plein air. Soyez aimable de nous contacter pour assurer les derniers prix en cours du tableau.

As 10 imagens do coracao, contidas neste livro podem ser obtidas num conjunto de 10 imagens em colorido no tamanho de (86 x 61 cm). Estes "Cartazes do Coracao podem ser obtfdos com caracterfsticas Europeias e Africanas e podem ser usados em conjuncao com o mesmo livro em classes de ensino biblico, evangelizacao ou ao ar livre. Agradeciamos que nos contacta- se para confirmacao do ultimo preco dos cartazes.

Kindly write to us if you are able to assist us with further translations of our free Gospel literature, informing us of the language into which you could translate this Gospel literature. Your assistance would be appreciated.

Copyright ANGP

If you have found salvation in Christ, or have been otherwise blessed through our Gospel literature, please let us know. We would like to thank God with you, and remember you further in our prayers.

Nous vous invitons a nous contacter pour faire des arrangements concernant de nouvelles traductions de notre litterature, nous informant de la langue dans laquelle vous pouvez traduire cette litterature evangelique. Votre aide sera beaucoup appreciee.

Si vous avez trouve le salut en Christ ou si vous avez ete beni par notre litterature, nous vous prions de nous le faire savoir. Nous aimerions remercier Dieu avec vous et prier pour vous.

Nos vos convidamos a nos contactar, afim de fazer qualquer arranjo concernente a novas traducoes de nossa literatura em outras lfnguas. Vossa assistencia sera muito apreciavel.

Se tem encontrado a salvacao em Cristo, ou se tem sido abencoado por intermedio da nossa literatura evangelica, faca o favor de nos

informar. Pois nos gostaríamos de agradecer a Deus juntamente convosco, e lembra-lo sempre em nossas oracoes.

For free Gospel literature, books and tracts in over 538 languages, write to:

Pour obtenir gratuitement de la litterature evangelique, des livres et des traites en plus de 538 langues, ecrivez a:

Para obter gratuftamente a literatura evangelica, livros e folhetos em mais de 538 Ifnguas diferentes escreva para:

E-MAIL: info@angp-hb.co.za
info@angp.co.za

ALL NATIONS GOSPEL PUBLISHERS
P.O. Box 2191
PRETORIA
0001
R.S.A.

Copyright ANGP

A Gospel Literature Mission financed by donations
Une Mission de litterature evangelique financee de dons
Missao de literatura Evanqelica financiada por donativos

(Reg. No. 1961/001798/08)